ग्रीन रिवोल्ट

हरित-नीरा रहे वसुंधरा

पेजः 3
लॉक-डाउन से परेशानी, पर ये जरूरी था

रविवारीय, 29 मार्च - 04 अप्रैल 2020 वर्ष- एक, अंक-34, रांची, कुल पृष्ठ 4 हिन्दी साप्ताहिक R.N.I. No. JHAHIN/2019/78094 www.greenrevolt.news मूल्यः 2 रूपये

ग्रीन रिवोल्ट के पाठकों से आग्रह है कि आप पर्यावरण, कृषि, जल संरक्षण, पशुपालन, बागवानी , पेट्स, वृक्षारोपण से संबंधित खबरें, समस्यायें, लेख,सुझाव, प्रतिक्रियायें या तस्वीरें हमें अवश्य भेजें। हमारा इमेल एवं ह्वाट्सएप नंबर है।

greenrevolt2019@gmail.com

9798166006

सब साथ दें तो हारेगा कोरोना

मुख्य संवददाता

रांची : जब रविवार 29 मार्च को प्रधानमंत्री मन की बात में देश से संवाद कर रहे थे तब उन्होंने सबसे पहले लॉकडाउन के लिये क्षमा मांगी और कहा कि ये बहुत जरूरी है। प्रधानमंत्री की इस मजबूरी से ही हम कोरोना संकट की भयावहता को आंक सकते है।

कोरोना के संकट से भारत भी नहीं बच सका है। हमारे देश में भी 28 मार्च तक कोरोना संक्रमित लोगों की संख्या एक हजार और इससे मरने वालों की संख्या बीस थी। वहीं 89 कोरोना के मरीज ठिक भी हुये। भारत स्वास्थ्य सुविधाओं के लिहाज से सफल देश नहीं है ऐसे में विश्व हमें इसी आशंका से देख रहा है कि दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला भारत कैसे इस महामारी से निबटेगा? यहां कितने लोग इसके शिकार बनेंगे? लेकिन अब तक हालात अनियंत्रित नहीं हैं।

कोरोना के तीसरे चरण में मरीजों की संख्या बढी जरूर है, पर कुछ बातें हमारे पक्ष में भी रही हैं और इस पर जीत की उम्मीद भी जगाती हैं।

- **अन्य से तुलना में कम संख्या में मौतें**
- **ज्यादतर मरने वालों की उम्र 60 से ऊपर**
- **तीसरे चरण में भी 1100 के आस पास ही संक्रमितों की संख्या**
- **नब्बे से ज्यादा मरीजों का पूर्ण रूप से ठिक होना**
- **गर्मी के मौसम का शुरू होना**
- **भारतीयों की रोग प्रतिरोधक क्षमता**

ये पांच तथ्य कोरोना को भारत में इटली या स्पेन की तरह संहारक बनने से रोके हुये है। हमारी स्वास्थ्य सुविधायें पहले से ही लचर हैं। सरकार से भी इसकी भयावहता आंकने में चूक हुई है। हाल तक हमारे देश से मास्क, ग्लब्स, सेनिटाइजर का निर्यात किया गया है। और आज खुद इसकी कमी हो गयी है। ऐसे में सतर्कता और जनता का लॉकडाउन में अनुशासित होकर रहना ही कोरोना को मात दे सकता है।

कई महत्वपूर्ण पर्व त्यौहारों ,दिवसों की रौनक को लील गया कोरोना

कोरोना से सिर्फ जान माल का ही नुकसान नहीं हो रहा है बल्कि भारत जैसे उत्सवजीवी देश में इन दिनों मनाये जाने वाले पर्व त्यौहारों के उमंग को भी इसने खत्म कर दिया है। चैत्र नवरात्रि, चैती छठ , सरहुल जैसे पर्व आ कर चले गये लेकिन इसकी कोई रौनक या खुशी देखने को नहीं मिली है। अब रामनवमी भी बिना किसी आयोजन उत्सव के ही बीतेगा? सबसे बड़ी समस्या तो उन लोगों को है जो खरवास खत्म होने के बाद शादी विवाह तय कर रखे थे और टेंट सामियाने , बैंक्वेट हॉल वालों को एडवांस दी जा चुकी है। अब कयास ये लगाया जा रहा है कि लॉकडाउन की अवधि निश्चय ही आगे भी बढायी जायेगी और ऐसे में सब कुछ टालना ही पड़ेगा। आखिर इस भयावह महामारी के सामने सभी लाचार हैं। प्रधानमंत्री भी देश में लॉकडाउन से परेशानियों के लिये क्षमा मांग चुके हैं।

महानगरों से गावों की ओर पलायन है नयी आफत

लॉकडाउन के बाद देश के महानगरों में रहने वाले कामगारों और मजदूरों के सामने रोजी रोटी की समस्या हो गयी और बहुत बड़ी आबादी अपने गावों की ओर लौटने लगी। चुंकि सभी आवाजाही के माध्यम रेल, बस, सवारी वाहन बंद हैं ऐसे में परेशान हताश ये मजदूर पैदल ही हजारो किमी की यात्रा पर निकल पड़े। इससे हाइवे पर हजारों लोगों की कतार बन गयी। सरकारों के लिये भी ये लोग नयी मुसीबत बन चुके हैं। इनमें ज्यादतर भूखे, और खाली हाथ हैं। सरकारें इन्हें जहां थे वहीं बुनियादी जरूरत की चीजें उपलब्ध करा कर रोकने में विफल रहीं। उल्टे दिल्ली सरकार पर तो ये आरोप लग रहे हैं कि उसने बिजली, पानी जैसी चीजें रोक कर गांव जाने के लिये बस की उपलब्धता की झूठी खबर फैला दी जिससे लाखो लोग गांव की ओर पलायन कर गये और दिल्ली यूपी बार्डर पर फंस गये। अब समस्या ये है कि ये मजदूर अगर गांव पहुंच गये तो इनमें से संक्रमित लोग गांवों के लिये कहर बन जायेंगे। क्योंकि जब गांवों की स्वास्थ्य व्यवस्था तो पहले से ही ध्वस्त है। इसी भय से बिहार के मुख्यमंत्री नितिश कुमार ने पहले ही कह दिया है कि बाहर से आने वाले लोगों को पहले क्वारेंटिन करेंगे । अन्यथा लॉक डाउन का उद्देश्य ही असफल हो जायेगा।

आदित्य होखअ न सहाय

अभी चैती छठ पर्व मनाया जा रहा है। हम सभी जानते हैं कि छठ महापर्व में सूर्यदेव की अराधना की जाती है और ऐसा माना जाता है कि छठ महापर्व में भुवन भाष्कर सूर्य की अराधना से समस्त जीवों को आरोग्य प्राप्त होता है। सभी निरोग हो जाते हैं। इसी कारण से देखा गया है कि छठ महापर्व में सिर्फ हिन्दू ही नहीं दूसरे धर्म के लोग भी सूर्यदेव की उपासना भक्ति भाव से करते हैं। आज देश को सूर्यदेव की कृपा की आवश्यकता आन पड़ी है। सूर्यदेव के तेज से प्राप्त धूप की अल्ट्रावायलेट किरणों से कोरोना वायरस के कमजोर होता है और उसके संक्रमण का भय घटता है।

सिर्फ कोरोना ही नहीं किसी भी वायरस के प्रसार में तापमान रूकावट पैदा करता है। वैज्ञानिकों का भी मानना है कि यूरोप के देशों में कोरोना के तेजी से फैलने का एक कारण वहां का कम तापमान वाला मौसम भी रहा है। ठंढे मौसम में कोरोना दुगुनी रफ्तार से लोगों को संक्रमित करते चला गया । आंकड़े भी बता रहे हैं कि कोरोना से मौतें भी उन देशों में ज्यादा हुईं जहां तापमान कम था। वहीं ज्यादा तापमान वाले देशों में संक्रमण के बाद भी मरीजों की मौतों की संख्या कम रही।

भारत में अमूमन मार्च की समाप्ति के समय अच्छी खासी गर्मी पड़ने लगती है लेकिन इस बार दुर्भाग्य से फरवरी के बाद भी शरद ऋतु खत्म नहीं हुआ और जब-तब की बारिश ओलावृष्टि ने मौसम को ठंढा बनाये रखा जो कोरोना के फैलने के लिये अनुकूल रहा। अब धीरे- धीरे मौसम गर्म हो रहा है जिससे कोरोना वायरस कमजोर होगा। लेकिन ऐसा मान लेना खतरनाक होगा कि गर्मी पड़ते ही हम बिल्कुल सुरक्षित हो जायेंगे। धूप से बाहर के वायरस कमजोर होंगे किसी संक्रमित व्यक्ति के शरीर के वायरस खत्म नहीं होंगे। इसलिये बढ़े हुये तापमान में भी सावधानी अति आवश्यक है।

अफवाह और बकवास करने वालों से बचें

इरान में एक अफवाह ने तकरीबन 300 लोगों की जान ले ली। वहां ये अफवाह फैली कि इथेनॉल, शराब या अल्कोहल पीने से शरीर में स्थित कोरोना के वायरस मर जाते हैं। इस अफवाह के बाद वहां लोगों ने इथेनॉल, अल्कोहल पीने शुरू कर दिये और इस चक्कर में तीन सौ लोग अपनी जान गवां बैठे। वहीं सोशल मीडिया पर भी नीम हकीमों की भरमार हो गयी है। जो अनाप शनाप तरीकों से कोरोना के इलाज का दावा कर रहे हैं। ये तथ्य जरूर है कि घर में तुलसी, दालचीनी गुड़, लौंग वगैरह से बना काढा कुछ हद तक गले और इम्यून के लिये फायदेमंद है। साथ ही डॉक्टर गर्म पानी पीने की सलाह दे रहे हैं। याद रखे कि अब तक इसकी कोई प्रामाणिक दवा नहीं बनी है।

रांची में पत्रकार बने लोगों और बेजुबानों का सहारा

रांची : आमतौर पर पत्रकारों को सिर्फ खबरों और सनसनी के लिये स्वार्थी माना जाता है । लेकिन कोरोना से उत्पन्न संकट में जहां सरकारी मशीनरी कई मौकों पर फेल हैं वहीं रांची के पत्रकारों ने आम लोगों की मदद कर मिसाल पेश किया है। कई पत्रकार अपनी रिपोर्टिंग के समय बेसहारा लोगों की मदद करने के साथ ही भूखे भटक रहे पशुओं, कुत्तों तक को खाना खिला रहे हैं। कइयों ने राज्य के बाहर फंसे झारखंडियों की अपने माध्यमों से मदद की है, वहीं कई भोजन, पानी , बिस्किट लेकर रिपोर्टिंग के लिये निकलते हैं और जहां जो भी जरूरतमंद मिले उसकी मदद कर रहे हैं। अपने नेटवर्क से जरूरतमंदों तक दवा और राशन तक पहुंचवा रहे हैं वहीं रांची प्रेस क्लब की टीम ने भी भोजन और मास्क का वितरण जरूरतमंदों के बीच किया है।

रेल मंडल ने खानाबदोशों के लिए भोजन की व्यवस्था की

रांची : कोरोनावायरस के संक्रमण को रोकने के लिए संपूर्ण देश में 21 दिन का लॉक डाउन चल रहा है । इस लॉक डॉन के दौरान मजदूर वर्ग एवं खानाबदोश परिवार के सामने भोजन की विकट समस्या उत्पन्न हो गई है। इस स्थिति में रांची रेल मंडल के मंडल सुरक्षा आयुक्त प्रशांत यादव को सूचना प्राप्त हुई की जग्गनाथपुर मंदिर, धुर्वा के नजदीक 30-35 खानाबदोश परिवार हैं जिन्हें भोजन नहीं मिल पा रहा है।इस पर त्वरित संज्ञान लेते हुए प्रशांत यादव ने रांची मंडल के रेल सुरक्षा बल के कर्मचारियों द्वारा लगभग 1 सप्ताह के लिए चावल, दाल, सब्जी एवं राशन के अन्य सामान उन सभी 30-35 परिवार वालों के लिए उपलब्ध कराएं तथा लॉक डाउन के दौरान घर से बाहर नहीं निकलने को कहा।

कोरोना के बाद अब बर्ड फ्लू का भी खतरा

पहले रांची के बिरसा जैविक उद्यान में बर्ड फ्लू से दस पक्षियों की मौत हुई थी वहीं बिहार में बर्ड फ्लू देखने को मिला अब बुण्डू में मृत बगुले के मिलने से बर्ड फ्लू की आशंका!

सिदाम महतो

रांचीः बुण्डू प्रखण्ड के एडकेया गांव में पिछले मंगलवार को एक बगुला मृत पाया गया। सुबह लोगों की नजर पड़ी। बगुले के मृत शव से दुर्घन्ध फ़ैल रही थी। इससे पहले देश के अलग-अलग हिस्से से पक्षियों के मरने की खबर आ चुकी है। इसी महीने केरल में कोझिकोड जिला के कोडियाठुर क्षेत्र में बर्ड फ्लू की पुष्टि हुई है। वहां भी कुछ पक्षी मरे थे। मध्यप्रदेश में भिंड जिले के मेहगांव में मुर्गे-मुर्गियों के मौत से बर्ड फ्लू की पुष्टि हुई। तब वहां की सरकार ने 1 के दायरे में सभी पक्षियों और मुर्गे-मुर्गियों को मारने के आदेश दिए।

पड़ोसी राज्य बिहार में भी सैकड़ों कोए मृत पाए गए। वहां दो जगह बर्ड फ्लू के संक्रमण की पुष्टि के बाद, संक्रमित स्थानों के दायरे में सभी मुर्गे-मुर्गियों को मारने का काम किया जा रहा है। पिछले सप्ताह झारखण्ड के ओरमांझी जू में दस चिड़ियों की मौत बर्ड फ्लू की वजह से हुई । जू के निदेशक डी. वेंकटेश्वरुलु ने ग्रीन रिवोल्ट को बताया था कि

अगर यहां के कुछ पक्षियों को बर्ड फ्लू हुआ था तो सम्भव है झारखंड में और भी कहीं संक्रमण हो।

एडकेया गांव में भी बर्ड फ्लू के संक्रमण की आशंका के डर से लोगों ने इसकी सुचना क्षेत्र के पशुपालन पदाधिकारी को देनी चाही पर लॉक डाउन की वजह से उनसे मुलाकात नही हो पाई। बाद में इस घटना की जानकारी झारखण्ड सरकार के हेल्पलाइन नम्बर 181 में दे दी गई। उसके बाद भी प्रशासन हरकत में नही आई। अंत में पास के घर वालों ने पक्षी को मिटटी से ढक दिया। इस घटना से क्षेत्र में बर्ड फ्लू की आशंका बढ़ गई है। घटनस्थल के पास में पोल्ट्री की दुकान है , हो सकता है वहां के मुर्गे -मुर्गियां भी बर्ड-फ्लू से संक्रमित हो।लोग चिकन खा भी सकते हैं!

ज्ञात हो कि बर्ड फ्लू की बीमारी पक्षियों से इंसानों में आता है और इसके लक्षण भी कोरोना जैसे ही होते हैं। लोगों को मृत पक्षियों से दूर रहने की सलाह दी जाती है। और ऐसी भी प्रकार के मांसाहार से दूर रहने की सलाह दी जाती है। ●

रांची जिला प्रशासन ने वाहन के लिए जारी किया ई-पास

- **मेडिकल, इमरजेंसी सेवा, डोर टू डोर सर्विस, होलसेल/रिटेलर सर्विस, अन्य सरकारी सेवा**
- **एप्प डाउनलोड कर आपातकालीन जरूरत के मद्देनजर कर सकते हैं आवेदन**
- **जिला स्तर के विभिन्न पदाधिकारियों को बनाया गया है अप्रूवल हेतु नोडल**

रांची :कोविड-19 के बढ़ते प्रकोप के मद्देनजर रांची जिला प्रशासन द्वारा पूरे जिलाभर में लॉकडाउन की घोषणा के साथ ही धारा 144 लागू कर दी गई है। इस दौरान लोगों को किसी भी तरह की परेशानी ना हो, सभी आवश्यक सेवाएं जारी रहें इस पर पहल करते हुए रांची जिला प्रशासन द्वारा ई-पास सेवा की शुरुआत की गई है। इसके लिए एक एप्प भी जारी किया गया है। इस एप को गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है और जरूरी वाहन पास के लिए आवेदन किया जा सकता है। जिसके पश्चात संबंधित पदाधिकारी द्वारा वहीं ऑनलाइन अप्रूवल देकर पास जारी कर दिया जाएगा।

कौन कर सकता है पास के लिए आवेदन

पास आवेदन का अप्रूवल सिर्फ उन्हीं लोगों को दिया जाएगा जो या तो आवश्यक सेवा में हैं या फिर किसी आपातकालीन सेवा में हैं। अलग-अलग सेवाओं के लिए अलग-अलग रंगों का पास जारी किया जाएगा। पास आवेदन के लिए इंडस्ट्री/मैन्यूफेक्चर, डोर टू डोर, होलसेल/रिटेल, निजी क्षेत्र, आवश्यक सरकारी सेवा, मेडिकल सेवा एवं अन्य आपातकालीन जरूरत के लिए लोग योग्य हैं।

कैसे करें आवेदन

आवेदन करने के लिए कोई जरूरतमंद पहले गूगल प्ले स्टोर के जरिए एप डाउनलोड कर सकते हैं। इसके लिए गूगल प्ले स्टोर में जाकर 'Pragyaam' सर्च कर सकते हैं। इसके बाद 'Grid by Pragyam' सर्च रिजल्ट में दिखाई देगा। इसे अपने फोन में डाउनलोड करें। इसके बाद एप को खोल कर झारखण्ड ई पास पर क्लिक करें। इसके साथ ही लॉगइन डिटेल भर कर एप में लॉगइन किया जा सकता है। इसके बाद 'व्हीकल ई पास' पर क्लिक करें। दाहिनी ओर दिख रहे नीले रंग के + बटन पर क्लिक करें। पूरे फॉर्म को भरें। ओटीपी भरें। इसके बाद आपके पास एसएमएस के जरिए आपको आपका पास लिंक के जरिए एसएमएस पर भेज दिया जाएगा। यह पास ई फॉर्मेट में वैलिड है। इसके साथ आपको अपना एक वैलिड आईडी कार्ड भी दिखाना होगा।

कैसे करेंगे अधिकारी जांच

जांच के दौरान आप या तो पास का प्रिंट आउट या ई पास दिखा सकते हैं। इसके बाद आपसे आईडी कार्ड मांगा जाएगा। आईडी कार्ड के बाद, आपके ई-पास नम्बर को जांचकर्ता अधिकारी संबंधित एप्प के जरिए आपके पास नम्बर का मिलान करेंगे। इसमें पास धारक का नाम और मोबाइल नम्बर का मिलान किया जाएगा। किसी भी तरह की अनियमितता या फेक पास दिखाने पर आपके खिलाफ़ सुसंगत धाराओं के तहत जरूरी कानूनी कार्रवाई की जा सकती है।

पास अप्रूवल हेतु विभिन्न जिला स्तरीय पदधिकारियों को अलग-अलग केटेगरी में पास अप्रूवल की कमान सौंपी गई है। उपायुक्त रांची राय महिमापत रे ने कहा कि, "आमजनों को हर संभव हर जरूरी सामान उपलब्ध कराने हेतु ई-पास सिस्टम जारी किया गया है। इसके तहत एसेंशियल सेवा में लगी गाड़ियों जैसे, राशन का सामान लाने ले जाने के लिए इस्तेमाल होने वाले वाहन, दवाइयां पहुंचाने वाले वाहन, मेडिकल सेवा सहित अन्य जरूरी सेवाओं में लगी वाहनों के लिए इस एप के जरिये पास जारी किया जाएगा।"

कोरोना संक्रमण से इस तरह किसान करें बचाव

डॉ. एम.एस.यादव

कृषि वैज्ञानिकों की सलाह

रांची : बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने कोरोना वायरस संक्रमण से बचाव के लिए प्रदेश के किसानों के लिए कई महत्वपूर्ण सलाह साझा किया है. वैज्ञानिकों ने रबी फसलों की कटाई और थ्रेशिंग के दौरान किसानों को सोशल डिस्टेन्सिंग का सख्ती से पालन करने, मुंह पर मास्क लगाने और फसल की कटाई उपकरण तथा खाने - पीने के बर्तनों के उपयोग में पूरी सावधानी बरतने की बात कही है।

शस्य वैज्ञानिक एवं डीन एग्रीकल्चर डॉ एमएस यादव ने बताया कि कोरोना

संकट को देखते हुए फसल कटाई में यथासंभव मशीन चालित यंत्रो का उपयोग बेहतर होगा। हस्त चालित कृषि उपकरणों के उपयोग में पूरे दिन में कम से कम तीन बार साबुन के पानी से धोकर उपकरणों को कीटाणु रहित किये जाने की जरूरत है. फसल कटाई में किसानों को सामाजिक दूरी (सोशल डिस्टेन्सिंग) पर विशेष ध्यान दिये जाने की जरूरत है. खेतों में फसल कटाई एवं खाना खाने के समय दो व्यक्तियों के बीच की कम से कम 5 मीटर की दूरी रखना चाहिये। खाने - पीने का बर्तन बिलकुल अलग -अलग रखें, उन्हें साबुन के पानी से अच्छी तरह धोकर ही उपयोग में लाये. कृषि कार्य के के समय खेतो में पर्याप्त मात्रा में पीने का पानी और साबुन के पानी की व्यवस्था रखें. फसल की कटाई के समय एक व्यक्ति द्वारा उपयोग में लाया जाने वाला उपकरण का दूसरा व्यक्ति प्रयोग नहीं करे. कृषि कार्य से जुड़े व्यक्ति अपना अलग - अलग कृषि उपकरण रखे।

फसल कटाई के समय सभी किसान और मजदूर अपनी अलग -अलग पानी की बोतल रखे. थोड़े - थोड़े अंतराल में पानी का सेवन करें. फसल कटाई के दौरान बीच - बीच में अपने हाथों को अच्छी तरह पानी से धोते रहे. कृषि कार्य में पहले दिन पहने कपड़ो को दुसरे दिन नहीं पहने. कपड़ो को अच्छी तरह साबुन से धोकर धुप में पूरी तरह सुखाकर ही कपड़ो को पुनः पहने. डॉ यादव ने किसानों को सरसों एवं तीसी फसल की अविलंब कटाई करने की सलाह दी है. फसल परिपक्व होने पर अन्य खड़ी फसलों की कटाई करने को कहा है।

आने वाले दिनों में आसमान साफ रहने के साथ दिन एवं रात के तापमान में दो से तीन डिग्री सेल्ससयस बढ़त होने का संकेत मिलने की बात कही है. मौसम शुष्क एवं साफ रहने की संभावना को देखते हुए सभी परिपक्व फसलों की कटाई को पूरा करने और कटे फसल को सुरक्षित स्थान पर सुखाकर भंडारण करने की सलाह दी है. उन्होंने इस दौरान किसानों को साबुन के पानी से अच्छी तरह धोने, फसल दौनी स्थल की स्वच्छता एवं बोरो की साबुन से धुलाई एवं अच्छी तरह सुखाकर व्यवहार करने को कहा है।●

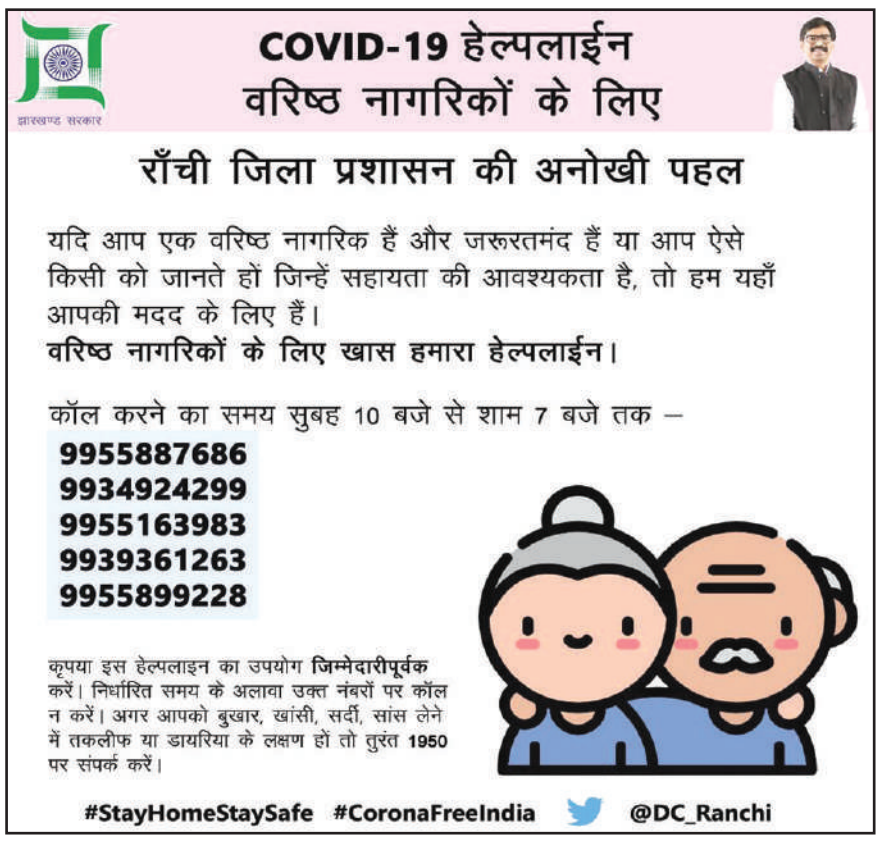

कोरोना का एक पक्ष ये भी

कोरोना वायरस के संहार से पूरी दुनिया सहमी हुई है। हर रोज दुनिया भर में हजारो लोग इसके काल का ग्रास बन रहे हैं । कहीं लॉकडाउन तो कहीं कर्फ्यू लगा हुआ है। यूं कहें कि तकरीबन सारी दुनिया अभी ठप्प है। बड़ी - बड़ी फैक्ट्रियों से लेकर , सड़कों पर वाहन, उद्योग धंधे सभी बंद हैं। रात हो या दिन जहां कभी जीवन थमता नहीं था वहां लोगों की भीड़ गायब है और सन्नाटा पसरा हुआ है। महानगरों का सन्नाटा देख वहां की सड़कों पर नीलगाय, हिरण और अन्य जंगली जीव घूम रहे हैं।

कोरोना से भय ने आम लोगों के साथ ही प्रदूषण फैलाने वाले हर माध्यम को ठप्प कर दिया है और इस कारण महज कुछ सप्ताह में ही से वातावरण में विश्वव्यापी सुधार दिखने लगे हैं। याद किजिये कुछ दिनों पहले दिल्ली में वायु प्रदूषण के कारण सांस लेना दूभर था लेकिन आज भयग्रस्त इस महानगर की हवा बिल्कुल साफ हो गयी है। सिर्फ हवा ही नहीं जल और थल प्रदूषण भी एकाएक इतना घटा है कि सालो प्रयास करने, चेतावनियों और योजनाओं के बाद भी प्रदूषण स्तर इतना कम नहीं किया जा सका था। बड़े बड़े महानगरों तक में ध्वनि प्रदूषण का नामो निशान नहीं है। सड़कें वाहनों के बगैर वीरान हैं और घरों से निकलने वाले कचड़े भी गायब हैं। ये सब जता रहा है कि हम मनुष्य भय से ही सुधरेंगे और सुखमय जीवन के लिये क्या अब तक उपलब्ध बहुत सारी चीजें जरूरी हैं? कोरोना तो सिर्फ एक माध्यम है। यहां प्रकृति के छुपे संदेशों और सबक को हम देखें तो ये स्पष्ट नजर आ रहा है कि मनुष्य अगर इसी तरह प्रकृति के खिलाफ छेड़छाड़ और अत्यधिक दोहन करता है तो प्रकृति स्वतः इसका बदला लेती है और मनुष्य को घुटनों के बल ला देती है। हमारे सारे अस्त्र शस्त्र और ज्ञान धरे के धरे रह जाते हैं। जब मनुष्यों के कृत्य से पैदा हुये पर्यावरणीय असंतुलन के बाद बाढ, सुखाड़ जैसी चेतावनियों को हमने नजरअंदाज किया तो प्रकृति ने हमें कोरोना के रूप में सजा देकर खुद के हुये क्षति की भरपाई कर ली। अब आगे क्या हम इससे कुछ सीखेंगे?

> समाचारों में ये खबरें आ रही हैं कि इटली के वेनिस में नहरों का पानी बिल्कुल साफ हो गया है, वहां मछलियां और बतखें फिर से दिख रही हैं और कब की गायब हो चुकी डॉल्फिनें भी आ गयी हैं। आप गौर करें तो आज कल रात्रि में आसमान साफ दिख रहा है और तारों की संख्या ज्यादा नजर आ रही है। आखिर ऐसा क्यों? दरअसल कोरोना के भय से मनुष्य जनित सारे प्रदूषण के माध्यम अभी बंद पड़े हैं और प्रकृति तेजी से इस मौके का क्षति पुर्ति करने में उपयोग कर रही है। ये सब बस यूं ही नहीं हो रहा है। मनुष्यों को कोरोना के रूप में सजा देकर प्रकृति हमें संदेश भी दे रही है कि आगे के लिये संभल जाओ।

छत्तीसगढ में ध्वस्त हो रहा है लाख और इमली का बाजार

कोरोनावायरस का प्रभाव देश में अभी कुछ ही दिन पहले दिखाई देने लगा है, लेकिन इसका प्रभाव दो महीने पहले से ही दिख रहा है।, क्योंकि विदेशों में कोरोनावायरस के फैलने पर निर्यात पर रोक लगा दी गई थी, जिस कारण जंगल से मिलने वाले लाख जैसे उत्पादों का निर्यात रुक गया था।'' यह कहना है धमतरी के एक जाने माने वन व्यापारी दिलावर रोकडिया का। छत्तीसगढ़ का धमतरी जिला न केवल भारत, बल्कि एशिया में लाख के बाजार के लिए मशहूर है। लेकिन पिछले इतवार को जनता कर्फ्यू के दिन से इस क्षेत्र में लगने वाले सभी साप्ताहिक बाजार बंद हैं। दिलावर बताते हैं कि यह लाख और इमली का सीजन है. इन वन उत्पादों का प्रमुख संग्रहकर्ता हैं आदिवासी। पर बाजार बंद होने के कारण वे अपने उत्पादों को बाजार में बेच नहीं पा रहे हैं और अगर वे बेच नहीं पाए तो वे और संग्रह करने के लिए जंगल नहीं जाएंगे, जिससे लाख और इमली जैसे वन उत्पाद नष्ट हो जाएंगे। इस तरह से आदिवासियों का कमाई का एक प्रमुख जरिया संकट में है। एक तरफ जहां व्यापारियों के गोदाम पैक हैं। वहीं दूसरी तरफ आदिवासियों के घर में लाख और इमली भरी पड़ी है। दूसरी ओर लॉक-डाउन की वजह से लाख प्रोसेसिंग सेंटर भी बंद पड़ा है, क्योंकि मजदूरों को आने से मना कर दिया गया है। धमतरी जिला छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र है। यहां करीब 200 राईस मिल हैं, कई थोक दुकानें हैं और कंस्ट्रक्शन के काम भी होते हैं। इन सब के चलते हर दिन धमतरी और आसपास के करीब 15 हजार मजदूर रोजगार पाते हैं। अब देश के बाकी मजदूरों की तरह घर में बैठ हुए हैं।

झारखण्ड का बदलता मौसम और खेती एक बड़ी चुनौती

डॉ. ए. वदूद

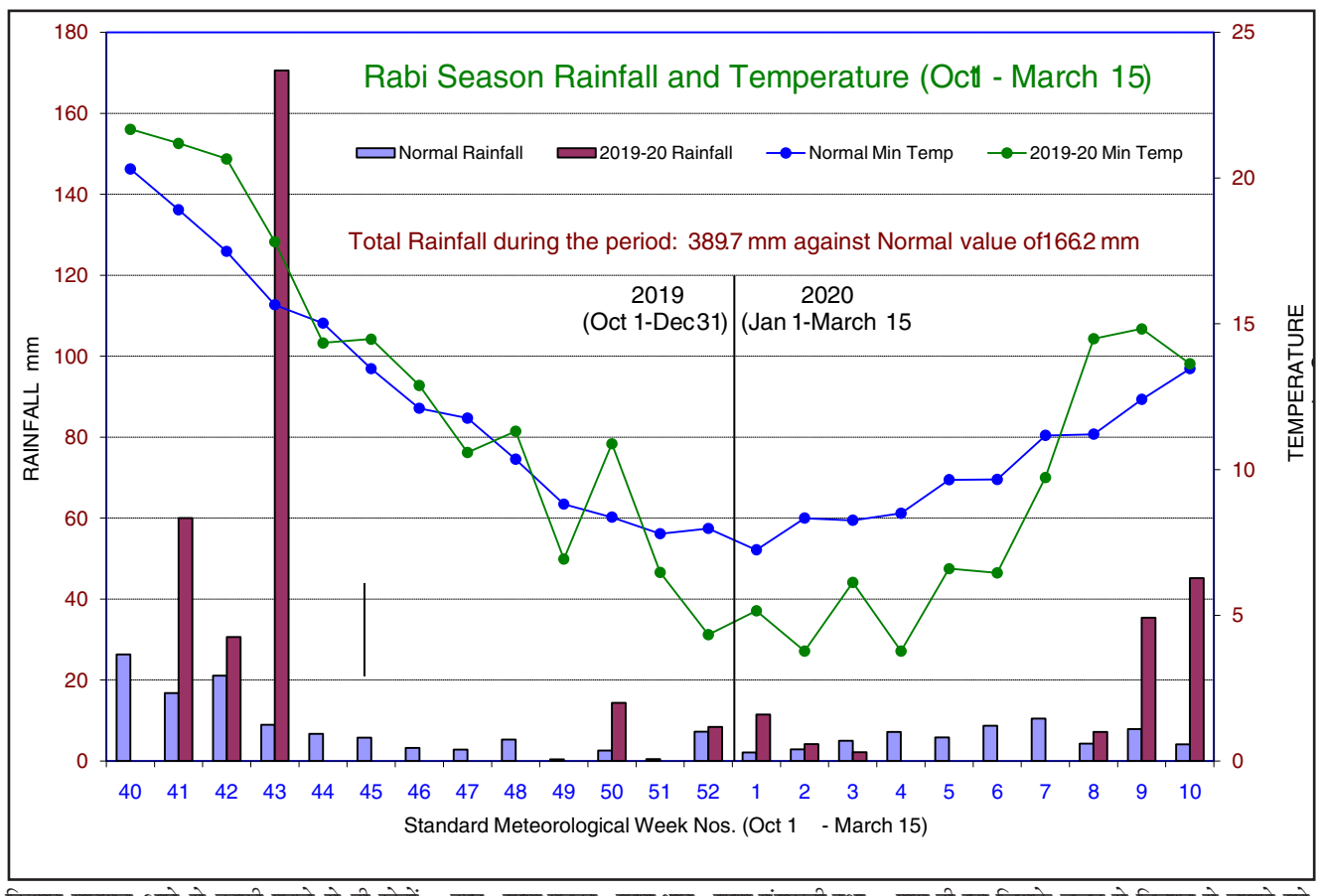

अब आशंका मात्र ही नहीं बल्कि विश्व का मौसम वास्तव में बदल चुका है । झारखण्ड भी अछूता नही है , यहाँ का मौसम भी काफी हद तक बदल चुका है जिससे विशेषकर यहाँ की खेती प्रभावित हो रही है और कृषक तथा कृषि वैज्ञानिकों के समक्ष एक बड़ी चुनौती आन खड़ी हो गई है ।

झारखण्ड के मौसम में जो मुख्य बदलाव आये है वे इस प्रकार है :

1. वार्षिक वर्षा में दशक दर दशक बढ़ोत्तरी हुई है (गढवा पलामू छोड़ कर) 1960 के दश्क में लगभग 1100 मिमी वार्षिक वर्षा होती थी जो अब बढ़ कर 1300 मिमी के लगभग हो गइ है परन्तु गढवा पलामू क्षेत्र जो कि रेन शैडो क्षेत्र है वहां पहले के मुकाबले वार्षिक वर्षा में काफी कमी आइ है जो घटकर अब मात्र 800-900 मिमी रह गइ है ।

2 वार्षिक वर्षा बढ़ोत्तरी तो हुइ पर साथ- साथ हाल के वर्षा में इसके वितरण में अवांछनीय अनियमितता आइ है जिससे राज्य को अधिकांश वर्षों में कृषि सुखाड, का सामना करना पड,ता है अर्थात प्रचुरता में अभाव की स्थिति बन गइ है । किसी वर्ष शुरूआती बारिश अच्छी होती है तो फसलों का आच्छादन अच्छा और ससमय तो हो जाता है पर बाद में जब फसल लहलहा रही होती है तो बारिश नहीं या बहुत कम होती है, ऐसे में मेहनत से लगाई गई फसलें सूख जाती है और किसान अपने को ठगा सा महसूस करते है । इस स्थिति से निबटने के लिए किसानों के पास कोइ विकल्प उपलब्ध नही होता क्योंकि यहां सिंचाई की उपलब्धता मात्र 10 से12 प्रतिशत भूमि में ही है जो कि बिल्कुल ना के बराबर है पर यहां ऐसी स्थिति में यदि किसान शुरूआत में हो रही अच्छी वर्षा के दिनों में जोताई एंव बोआई के साथ -साथ वर्षा जल को संग्रहित एंव संचित कर सकें तो इस पानी को जीवन रक्षक सिंर्चाइ के तौर पर इस्तेमाल कर कृषि सुखाड़, से जूझ रहे फसलों को निश्चित तौर पर बचा सकते है । ऐसा करने के लिए किसानो तथा सरकार के संबन्धित विभागो के स्तर पर प्रयास करना होगा । छोटे - बड़े तालाबों, चेकडैम का निर्माण एंव जीर्णोद्वार करना तथा किसानों को अपने खेतों के आस पास छोटे- छोटे गढ्ढे या डोभा बनाने को प्रोत्साहित करना होगा । डोभा भी यहां की परिस्थिति में एक अच्छा और प्रभावकारी विकल्प हो सकता है पर इसके लिए जरूरी है कि डोभा निमार्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हो विशेषकर इसका आकार - विकार और जगह का चयन विशेषज्ञों के देखरेख में हो ताकि बनाये गये डोभा में समूचित जल संग्रह हो सके और आवश्यकतानुसार सिंर्चाइ संभव हो ।

3. वर्षा के दिनों में भी हाल के वर्षो में काफी कमी आई है जहां पहले साल भर में 75- 80 दिन वारिश होती थी अब वह घटकर मात्र 60- 65 दिन रह गया है । इस बदलाव के कारण जहां अक्सर कृषि सुखाड़, हो रहे है वही भूक्षरण की समस्या बढ, गई है जिससे खेतों के ऊपरी उपजाउ परत की मिट्टी का क्षरण हो रहा है । इतना ही नहीं वर्षा की तीव्रता में बढ़ोत्तरी के कारण वर्षा जल का प्राकृतिक संग्रहण जितना पहले होता था अब उतना नहीं हो पा रहा है जिससे भूगर्भ जल स्तर में काफी कमी आ रही है। इस स्थिति से निपटने के लिए भूमि एंव जल संरक्षण विभाग को अब और भी सक्रिय होना होगा ।

4. मानसून पूर्व वर्षा अर्थात मार्च से जून के प्रथम सप्ताह तक यहां झारखण्ड, में लगभग 150 मिमी स्थानीय बारिश होती थी जिसका इस्तेमाल कर किसान मानसून आने से काफी पहले से ही खेतों की तैयारी कर समय पर फसलों की बुआई कर पाते थे लेकिन अब यह वर्षा घटकर मात्र 50 से 60 मिमी हो गयी है जिसके कारण खेतों की ससमय तैयारी बाधित हो ही रही है साथ साथ निरन्तर बढ़ती गर्मी पर लगाम भी नही लग पाता ।

5. पहले मानसून के आगमन, मात्रा तथा वितरण की स्थिति कुछ ऐसी थी कि झारखण्ड के किसान 15 जून से फसलों की सीधी बोआंइ तथा रोपाधान के लिये नर्सरी लगाना शुरू कर 15 जुर्लाइ तक लगभग 80 प्रतिशत और बाकी 20 प्रतिशत आच्छादान 31 जुर्लाइ तक सम्पन्न कर लिया करते थे । परन्तु अब पिछले दो तीन वर्षो से मौसम की स्थिति ऐसी हो गई है कि फसलों की प्रभावकारी बोआंइ लगभग एक महीने बाद यानी 15 जुर्लाइ से शुरू कर पा रहे है और यदि सब कुछ ठीक रहा तो भी 31 जुर्लाइ तक मात्र 25 -30 प्रतिशत ही आच्छादान हो पा रहा है और किसान मजबूरी में 31 अगस्त तक बोआंइ एंव रोपाइ का कार्य करने पर मजबूर होते है । मौसम की वर्तमान परिस्थिति में खेती का कार्य लगभग रक महीना शिफ्ट हो जाना एक बड़ा बदलाव है और यह कृषि वैज्ञानिकों के समक्ष भी एक बड़ी चुनौती है । लगता है आने वाले समय में झारखण्ड के लिए कृषि शोध को बदलते मौसम के परिपेक्ष में नये सिरे से नये दिशा में मोड़ना होगा ।

6. गर्मी के दिनों में और अधिक गर्मी तथा सर्दी के दिनों में और अधिक सर्दी, दोनों ही बातें रहन -सहन तथा खेती बाड़ी के लिए अवांछनीय है । पहले यहा अधिकतम तापमान अप्रैल - मई में 40 डिग्री से अधिक हो जाता था पर एक या दो दिन के लिये ही परन्तु अब रांची में 42 तथा अन्य क्षेत्रों जैसे धनबाद, जमशेदपुर तथा पलामू में तापमान 48 डिग्री तक कई - कई दिनों तक बना रहता है। न्यूनतम तापमान भी दिसम्बर - जनवरी में पहले 10 डिग्री के नीचे नही जाता था पर अब यह 3 से 5 डिग्री काफी दिनों तक बना रहता है । कांके जो कि गाँव का प्रतिनिधित्व करता है वहाँ तो न्यूनतम तापमान 1 डिग्री तक भी चला जाता है । हाल के वर्षो मे देखा गया है कि कांके का न्यूनतम तापमान करीब 29 दिनों तक 5 डिग्री के आसपास या उससे नीचे ही रहता है ।

अगर वर्तमान रबी मौसम की बात करें तो वर्षा एंव न्यूनतम तापमान के परिपेक्ष्य में 2019- 20 का रबी मौसम में एक आश्चर्यजनक बदलाव देखा जा रहा है । एक अक्टूबर 2019 ह्म 40वाँ मेटयोरोलोजिकल वीक) से लेकर 15 मार्च 2020 ह्म10 वाँ मेटयोरोलोजिकल वीक) की अवधि रबी फसलों के लिये काफी महत्वपूर्ण है । इस अवधि में मुख्य रूप से गेँहू , चना, सरसें, आलु , मटर, मुंग, उरद, गरमा मक्का, गरमा धान, गरमा मूंगफली तथा विभिन्न प्रकार के शाक सब्जियों की खेती होती है । इस अवधि में सामान्यतः बारिश बहुत कम होती है और अधिकांश खेती तालाब, गढ्ढों तथा कुओं में उपलब्ध सीमित सिंचाई के द्वारा की जाती है । इस अवधि में सामान्यतः 166 मिमी (30 साल का औसतः 1973 - 2020) वर्षा होती है परन्तू इसमें कोंइ निश्चितता नहीं होती है । इस वर्ष सौभाग्य से कहें या मौसम परिवर्तन के फलस्वरूप इस अवधि में काफी अच्छी बारिश 390 मिमी हुई है जो कि सामान्य से लगभग 235 प्रतिशत ज्यादा है और वर्षा का वितरण भी बहुत अच्छा हुआ है ।

रबी मौसम के शुरूआत में यानि 8 अक्टूबर से 28 अक्टूबर (मेटयोरोलोजिकल बीक 43- 43) तक कुल 261 मिमी बारिश हुई जिससे रबी फसलों की बोआई अच्छी तरह से हो गंइ। फिर 10 दिसम्बर 2019 से 21 जनवरी 2020 तक कुल 41 मिमी बारिश हुंइ जो कि खड़ी फसलों के लिये एक वरदान साबित हुआ । परन्तु 19 फरवरी से लेकर 15 मार्च के दरम्यान करीब 88 मिमी बारिश हुई जिसका अच्छा प्रभाव के साथ साथ काफी बुरा प्रभाव भी पड़ा । अच्छा इसलिये कि खेतों में नमी आ गई जो कि फसलों के लिये लाभप्रद होता है और बुरा इसलिये कि इस बारिश के साथ साथ तेज हवा और राज्य के कई स्थानों पर ओले भी पड़े ओला पड़ने से जहाँ गेँहू , चना सरसों, आदि फसलें खेतों में ही धराशायी हो गई वही शाक सब्जियां बर्बाद हो गईं। हालांकि बारिश के साथ साथ ओले पड़ने का कुप्रभाव केवल उन क्षेत्रों में पड़ा जहाँ -जहाँ ओले भी पड़े कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि रबी मौसम में बारिश का ज्यादा होना फसलों के लिये बहुत अच्छा है परन्तु इसके साथ ओला पड़ने पर काफी नुकसान भी है। अतः इस मौसम परिवर्तन को साकारात्मक माना जा सकता है परन्तु इसका समुचित लाभ के लिये पर्याप्त प्रबन्धन करना भी जरूरी होगा।

रबी मौसम के इस अवधि में न्यूनतम तापमान का भी काफी महत्व है न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेल्सियस के इर्द गिर्द या इससे थोड़ा अधिक बना रहे तो यह फसलों के समुचित बढ़वार के लिये अच्छा होता है परन्तु इस वर्ष 18 दिसम्बर 2019 (51 वाँ मेटयोरोलोजिकल वीक) से लेकर 18 फरवरी 2020 (7 वाँ मेटयोरोलोजिकल वीक) तक न्यूनतम तापमान सामान्य न्यूनतम तापमान (1971-12000 औसत) से निरन्तर कम स्तर पर ही बना रहा, विशेष कर 24 दिसम्बर (52 वाँ मेटयोरोलोजिकल वीक) से लेकर 13 फरवरी (6 वाँ मेटयोरोलोजिकल वीक) तक अर्थात कुल 51 दिनों तक न्यूनतम तापमान 5 डिग्री से कम या इसके आस पास ही रहा जिसके वजह से विलम्ब से लगाये गये फसलों में या तो अकुंरण काफी विलम्बित हो गया या फिर नाजुक अवस्था वाले पौधों का बढ़वार कुंठित हो गया । इस अवधि में साप्ताहिक औसत के अलावा अगर रोजाना के न्यूनतम तापमान की बात की जाये तो कई - कई दिनों तक न्युन्तम तापमान 4 डिग्री या इससे भी कम रहा है । ज्ञात हो कि यदि तापमान 4 डिग्री से कम दो चार दिनों तक बना रहे तो नाजुक अवस्था वाले पौधों में पाला का प्रकोप हो जाता है जिसमें पौधों के अन्दर का पाानी जम जाता है और पौधों का बढ़वार रूक सा जाता है और किसानों को इस प्रभाव का पता भी नही चल पाता । ऐसी परिस्थिति में किसानों को सलाह दी जाती है कि शाम के समय खेतों के आस पास या मेड़ों पर घास फुस जलाकर धुआं कर दें या संभव हो तो हल्की सिंचाई कर दें । इससे पौधों के दरम्यान का तापमान 3 से 4 डिग्री कम हो जाता है और पौधे पाला के प्रकोप से बच जाते हैं। अधिकतर फसलें जैसे चना, सरसों, शिमला मिर्च तथा अन्य सब्जियाँ जो इस अवधि में बोयी गई थी उनका अंकुरण एक तो बहुत विलम्ब से हुआ दूसरे जो पौधे निकले भी तो उनका बढ़वार रूक सा गया है यानि बढ़वार कुंठित हो गया हालाकि गेहूँ जो समय पर बोया गया था और जनवरी के शुरूआत तक पौधों की बढ़वार हो चुकी थी उनमें कम तापमान का उतना असर नही देखा जा रहा है । कुल मिलाकर इस वर्ष रबी फसल (गेहूँ छोड़ कर) के अच्छे पैदावार की उम्मीद कम ही है और यह सब मौसम के बदलाव के कारण है ।

इस अवधि में वर्षापात में साकारात्मक बदलाव तो काफी हद तक स्वागता योग्य है परन्तु न्यूनतम तापमान में यह अभुतपूर्व नाकारात्मक बदलाव रबी फसलों के लिये अच्छा संकेत नही है। वर्षापात तथा तापमान में इस परिवर्तन से खरीफ फसलों में जहाँ रोग व्याधि का प्रकोप बढ, गया है वही रबी में बोये गये बीजों के अंकुरण में विलम्ब तथा नाजुक पौधो के बढ़वार में एक तरह का ठिठुरन सा दिखने लगा है। मौसम और खेती बारी के वर्तमान चुनौतीपुर्ण परिस्थितियों के मद्देनजर अब इस बात की भी अत्यन्त आवश्यकता महसूस की जा रही है कि यहाँ की खेती को नये तरीके से मौसम के अनुरूप नये शोध के आधार पर सुनिश्चित करने के दिशा में कार्य किया जाय जिसके लिये कृषि शोध को नयी दिशा और नया आयाम देना होगा। साथ ही यहां के मिट्टी, खेतों की विभिन्न परिस्थितियों तथा बदलते मौसम के मद्देनजर राज्य के लिये सटीक कृषि नीति का भी निर्माण करना होग ।●

लेखक बिरसा कृषि विश्वविद्यालय रांची में कृषि मौसम एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग में प्राध्यापक एवं अध्यक्ष हैं

पौधों के पास भी होती है घड़ी

पौधों में मनुष्यों की तरह, आंतरिक घड़ी होती हैं जिनसे उन्हें समय का पता चलता हैं। मनुष्यों में पाई जाने वाली इस सेलुलर घड़ी के प्रभाव से हम जागते और सोते हैं। पौधे दिन के उजाले पर बहुत अधिक निर्भर रहते हैं जबकि आंतरिक घड़ियां (सर्केडियन) इससे और भी अधिक प्रभावशाली होती हैं, जो प्रकाश संश्लेषण की दर को नियंत्रित करती हैं, गैस की अदला-बदली और वाष्पोत्सर्जन करती हैं। जिसमें तने के माध्यम से पानी का प्रवाह होता है और पत्तियों से वाष्पीकरण होता है। यह शोध प्लांट फिजियोलॉजी पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।
प्रो. एलिस्टेयर हेथरिंगटन की अगुवाई में शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि जैविक घड़ियां पानी की खपत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जिससे पौधे इस कीमती संसाधन का अधिक कुशलता से उपयोग कर सकते हैं। प्रयोगों से पता चला कि इनमें से कुछ को आंतरिक घड़ी (सर्केडियन) में परिवर्तन करने से पौधे कम पानी का उपयोग करते हैं।

बड़े पैमाने पर पिघल रहे हैं ग्लेसियर

एजेंसियां

सिक्किम के ग्लेशियर बड़े पैमाने पर पिघल रहे हैं। वे काफी पीछे खिसक गए हैं। उसकी बर्फ पिघलती जा रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण सिक्किम के छोटे आकार के ग्लेशियर पीछे खिसक रहे हैं। बड़े ग्लेशियर पिघलते जा रहे हैं। इसका खुलासा एक अध्ययन में हुआ है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत हिमालय के भू-विज्ञान के अध्ययन से संबंधित एक स्वायत्त अनुसंधान संस्थान देहरादून स्थित वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी (डब्ल्यूआईएचजी) के वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि अन्य हिमालयी क्षेत्रों की तुलना में सिक्किम के ग्लेशियर बड़े पैमाने पर पिघल रहे हैं। साइंस ऑफ द टोटल एनवायरनमेंट में प्रकाशित अध्ययन में 1991-2015 की अवधि के दौरान सिक्किम के 23 ग्लेशियरों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का आकलन किया गया। इससे यह पता चला कि 1991 से 2015 तक की अवधि में सिक्किम के ग्लेशियर काफी पीछे खिसक गए हैं। उनकी बर्फ पिघलती जा रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण सिक्किम के छोटे आकार के ग्लेशियर पीछे खिसक रहे हैं। बड़े ग्लेशियर पिघलते जा रहे हैं।

अन्य हिमालयी क्षेत्रों की तुलना में आयामी परिवर्तन का पैमाना और मलबे की वृद्धि की मात्रा सिक्किम में अधिक है। ग्लेशियर के व्यवहार में प्रमुख बदलाव 2000 के आसपास हुआ। पश्चिमी और मध्य हिमालय के विपरीत, जहां हाल के दशकों में ग्लेशियरों के पिघलने की गति धीमी हुई है, वहीं सिक्किम के ग्लेशियरों में 2000 के बाद इसमें नाममात्र का धीमापन देखा गया है। ग्लेशियर में हो रहे बदलावों का प्रमुख कारण गर्मी में वृद्धि है। सिक्किम हिमालयी ग्लेशियरों की लंबाई, क्षेत्र, मलबे के आवरण, हिम-रेखा की ऊंचाई (एसएलए) जैसे विभिन्न मापदंडों और उन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को समझने के लिए डब्ल्यूआईएचजी के वैज्ञानिकों ने इस क्षेत्र के 23 प्रतिनिधि ग्लेशियरों का चयन किया। विषय से संबंधित पहले से मौजूद ज्ञान का आकलन करने के लिए अध्ययन से संबंधित विस्तृत और कठिन साहित्य सर्वेक्षण किया गया।

इसके बाद, अध्ययन क्षेत्र में फैले प्रतिनिधि ग्लेशियरों का चयन आकार, लंबाई, मलबे के आवरण, ढलान, पहलू जैसे विविध मानदंडों के आधार पर किया गया। फिर, चयनित ग्लेशियरों को कवर करते हुए मल्टी-टेम्पोरल और मल्टी - सेंसर उपग्रह डेटा प्राप्त किए गए। टीम ने इन परिणामों का विश्लेषण किया। पहले से मौजूद अध्ययनों के साथ उनकी तुलना की। ग्लेशियरों की स्थिति को समझने के लिए उन पर प्रभाव डालने वाले विभिन्न कारकों का व्यवस्थित रूप से पता लगाया गया। इस क्षेत्र के ग्लेशियरों का व्यवहार विविधता से भरपूर है। ऐसा पाया गया है कि यह प्राथमिक तौर पर ग्लेशियर के आकार, मलबे के आवरण और ग्लेशियर झीलों से निर्धारित होता है। हालांकि छोटे (3 वर्ग किमी से कम) और बड़े आकार के ग्लेशियरों (10 वर्ग किमी से अधिक) दोनों के ही द्रव्यमान में सामान्यतः हानि देखी जा रही है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है, जैसे उन्होंने जलवायु परिवर्तनों से निपटने के लिए वे अलग-अलग तरीके अपनाये हैं। जहां छोटे ग्लेशियर विहिमनदन से पीछे खिसक रहे हैं, वहीं बड़े ग्लेशियरों में बर्फ पिघलने के कारण द्रव्यमान की हानि हो रही है। अब तक सिक्किम के ग्लेशियरों का संतोषजनक अध्ययन नहीं किया गया था। फील्ड-बेस्ड मास बेलेंस आकलन केवल एक ग्लेशियर तक सीमित था। यह अल्पावधि (1980-1987) तक ही चला था। इन अध्ययनों की प्रकृति क्षेत्रीय है और इसमें अलग-अलग ग्लेशियर के व्यवहार पर बल नहीं दिया गया। इसके अलावे इस क्षेत्र में अधिकांश आकलन केवल लम्बाई/क्षेत्र के बदलावों तक ही केंद्रित रहे हैं। वेग का आकलन भी अत्यंत दुर्लभ रहा है। इस अध्ययन में पहली बार ग्लेशियर के विविध मानकों यथा लम्बाई, क्षेत्र, मलबे के आवरण, हिम-रेखा की ऊंचाई (एसएलए), ग्लेशियर झीलों, वेग और बर्फ पिघलने का अध्ययन किया गया। सिक्किम में ग्लेशियरों की स्थिति और व्यवहार की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करने के लिए उनके अंतर-संबंध का पता लगाया गया।

ग्लेशियरों के आकार साथ ही साथ उनमें हो रहे परिवर्तनों की दिशा की सटीक जानकारी, जिसे मौजूदा अध्ययन में उजागर किया गया है, वह जलापूर्ति और ग्लेशियर के संभावित खतरों के बारे में आम जनता, विशेषकर उनके निकटवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के बीच जागरुकता उत्पन्न कर सकता है। यह अध्ययन ग्लेशियर परिवर्तनों पर पर्याप्त आधारभूत डेटा प्रदान कर सकता है। ग्लेशियर मापदंडों और विभिन्न प्रभावकारी कारकों के बीच आकस्मिक संबंधों का व्यवस्थित रूप से पता लगा सकता है। इससे ग्लेशियर की स्थिति की स्पष्ट समझ भविष्य के अध्ययन को अनुकूल बनाने के साथ-साथ आवश्यक उपाय करने में मदद करेगी। ●

राज्य के बाहर मजदूरी करने वाले लोगों के लिए हेल्पलाइन

रांची : कोरोना के कारण राज्य से बाहर फंसे लोगो की मदद के लिये अलग-अलग राज्यों के लिए नोडल पदाधिकारी प्रतिनियुक्त किये गये हैं। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जी एवं श्रम मंत्री सत्यानंद भोक्ता ने देश के अन्य राज्यों में मजदूरी करने वाले झारखंड के लोगों की सहायता के लिए सभी राज्यों के लिए नोडल पदाधिकारी नियुक्त किया हैं। किसी भी सहायता के लिए निम्नलिखित नियुक्त पदाधिकारियों से संपर्क करें। जिनका नाम और नंबर इस प्रकार है।

- विनय कुमार चौबे दिल्ली) 9430119083
- प्रशांत कुमार (हरियाणा) 9431126679
- अमरेंद्र प्रतापसिंह (महाराष्ट्र) 9262997700

अनुबंध पर कार्यरत कर्मचारियों को भी ऑन ड्यूटी माना जायेगा

रांची :भारतीय रेलवे द्वारा यह सुनिश्चित किया गया है कि यात्री ट्रेनों के निलंबन की अवधि दौरान अनुबंध पर कार्यरत कर्मचारियों को ऑन ड्यूटी माना जाएगा, इसी आधार पर रांची रेल मंडल के अनुबंध पर कार्यरत कर्मचारियों को भी ऑन ड्यूटी माना जाएगा` चलती ट्रेनों में अपनी सेवा देने वाले, स्वच्छता, रसोई यान, स्टेशन, ऑफिस अनुबंध पर कार्य करने वाले कर्मचारियों को ऑन ड्यूटी माना जाएगा तथा यात्री ट्रेनों के निलंबन की अवधि का उन्हें भुगतान किया जाएगा । रांची रेल मंडल के अनुबंध स्तर पर कार्य करने वाले सभी कर्मचारियों पर यह लागू होगा। यात्री ट्रेनों के निलंबन के दौरान रांची रेल मंडल पर अनुबंध पर कार्य करने वाले कर्मचारियों को उनके कार्य से नहीं निकाला जाएगा ।

कार्यालयों को सेनेटाइज किया गया

कोरोना वायरस के संक्रमण को

ध्यान में रखते हुए रांची रेल मंडल द्वारा अत्यंत आवश्यक कार्य के लिए कार्यरत कर्मचारियों को इस संक्रमण से बचाने के लिए अनेक कार्य किए जा रहे हैं जैसे ऑफिस, कंट्रोल, स्टेशन पर स्थित कार्यालयों को सैनिटाइज किया जा रहा है।

मंडल के सेक्शन में कार्यरत रेल कर्मचारियों के लिए भी मेडिकल टीम के द्वारा कोरोना संक्रमण से बचाव हेतु विशेष अभियान चलाया जा रहा है। हटिया -मुरी- कोटशिला सेक्शन में कार्यरत रेल कर्मचारियों को सैनिटाइजर, मास्क, लिक्विड सोपका वितरण किया जा रहा है तथा इस संक्रमण से बचने के लिए क्या-क्या करना है इसके लिए भी उन्हें प्रशिक्षित किया जा रहा है। साथ ही मंडल पर मालगाड़ी के इंजनों को तथा गार्ड के डिब्बे को सेनीटाइज किया जा रहा है।

घबरायें नहीं ,सतर्क रहें हम झारखण्ड वासी मजबूत इरादों वाले हैं:मुख्यमंत्री

- मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन ने वेब कार्स्टिंग के माध्यम से राज्य के जिला परिषद, मुखिया, वार्ड पार्षद, जन प्रतिनिधियों को किया संबोधित
- जरूरतमंदों को मुख्यमंत्री कैंटीन के माध्यम से चूड़ा, गुड़ और चना उपलब्ध कराया जाएगा
- जिनका राशन कार्ड नहीं, उन्हें भी मिलेगा अनाज, किसी भी स्तर पर खाद्यान्न नहीं होगी कमी
- एक अनुरोध, उचित दूरी बनाकर खरीदारी करें, भीड़ ना लगाएं : हेमन्त सोरेन

संवाददाता

रांची: पूरा देश, पूरी दुनिया आज कोरोना वायरस के संक्रमण के दौर से गुजर रही है। इस संक्रमण का फैलाव लगातार बढ़ रहा है। यह बात अब झारखंड तक भी पहुंच रही है। आज देश के क्या हालात हैं, इससे हम सब वाकिफ हैं। इस महामारी से बचने के लिए कई तरीकों को अपनाया जा रहा है। हम झारखंड के लोग मजबूत इरादे वाले हैं। हमने जो ठाना है। उसे पूरा भी किया है। किसी को घबराने की जरूरत नहीं। बस इस महामारी से सतर्क रहने की आवश्यकता है। एकजुट होकर बुद्धिमत्ता व जागरूकता से महामारी को करारा जवाब देना है। सरकार पूरी तरह से तैयार है। इस लड़ाई में राज्य की जनता को भी अपनी महती भूमिका निभानी है। आवश्यक वस्तुओं की खरीदारी करते समय उचित दूरी बनाना बेहद आवश्यक है। हमें इस बात का भी ध्यान रखना है कि हम भीड़भाड़ वाले जगह से परहेज करें। भीड़-भाड़ ना हो यह सुनिश्चित करें। यह मेरा आप सभी से अनुरोध है। ये बातें मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन ने कही। श्री सोरेन वेबकास्टिंग के माध्यम से राज्य के सभी जिला परिषद, मुखिया, वार्ड पार्षद समेत जनप्रतिनिधियों को संबोधित कर रहे थे।

जिनका राशन कार्ड नहीं है उन्हें भी मिलेगा अनाज

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह दौर जीविका व जिंदगी का है। सभी को परेशानी हो रही है। पूरा देश लॉकडाउन है। इस वजह से मनरेगा का कार्य बंद है, फैक्ट्रियां बंद हैं, कहीं काम नहीं हो रहा है। क्योंकि समूह में लोग ना रहें यह सुनिश्चित किया जा रहा है। समूह में रहने से यह संक्रमण बड़ी तेजी से फैल सकता है। ऐसी स्थिति में सरकार जरूरतमंदों को सुविधा उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य कर रही है। 600 दाल-भात केंद्र के माध्यम से भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। थानों में भी भोजन उपलब्ध कराने का निर्देश दिया जा चुका है। दो माह का राशन अग्रिम उपलब्ध कराया गया है, जिन लोगों का राशन कार्ड नहीं है। इस स्थिति में गांव के मुखिया ऐसे लोगों की सूची जिला के उपायुक्त को उपलब्ध कराएं। उन्हें तत्काल अनाज मिलेगा। मुख्यमंत्री कैंटीन योजना के तहत सभी जरूरतमंदों को चूड़ा, गुड़ और चना का वितरण किया जाएगा। पेंशन भी लाभुकों को दिया जा रहा है।

दूसरे राज्यों में फंसे झारखंड वासियों हो रही है मदद

मुख्यमंत्री ने कहा कि रोजगार की तलाश में अन्य राज्य गए झारखंड वासियों का भी सरकार ख्याल रख रही है। उन्हें दो वक्त का भोजन मिले। यह सुनिश्चित किया जा रहा है, इसके लिए पदाधिकारियों की प्रतिनियुक्ति की गई है। साथ ही इन लोगों को सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कंट्रोल रूम की स्थापना हुई है। जहां लोग अपनी समस्याओं को दर्ज करा रहे हैं और उसका निदान भी करने का प्रयास सरकार लगातार कर रही है। दूसरे राज्य में फंसे लोगों के परिजनों को घबराने की जरूरत नहीं। किसी भी तरह की जानकारी के लिए 181 पर फोन किया जा सकता है।

बाहर से आए लोग सहयोग करें

मुख्यमंत्री ने कहा कि जो लोग विभिन्न राज्य से झारखंड आए हैं। वे 14 दिनों तक अपने घरों में ही रहें। किसी से मिले नहीं। अपने परिजनों से भी उचित दूरी बनाकर कर रहें। इन 14 दिनों में अगर संक्रमण से संबंधित किसी तरह का लक्षण प्रतीत नहीं होता है तो यह सुखद संदेश है। अन्यथा किसी भी तरह की परेशानी यानी सूखी खांसी, बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ होने पर तुरंत अस्पताल जाएं। सरकार आपको अपने संरक्षण में रखकर इलाज सुनिश्चित करेगी। इस कार्य में आपका सहयोग बेहद जरूरी है।

पंचायत भवनों में रहने का किया जा रहा है इंतजाम

मुख्यमंत्री ने कहा कि जिन्हें झारखंड में रहने की समस्या हो रही है , उनके लिए सरकार द्वारा पंचायत भवनों में रहने की व्यवस्था की जा रही है ' प्रखंड और और पंचायत स्तर पर क्लस्टर के माध्यम से भी लोगों को उनकी जरूरत के हिसाब से सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही है , इसलिए लोगों को घबराने की जरूरत नहीं है ।

रांची में घरेलू गैस की कोई कमी नहीं: इंडियन ऑयल चीफ मैनेजर

इंडियन ऑयल के एरिया चीफ मैनेजर ने कहा

- अपने घरों में सुरक्षित रहें, हमें सेवा का मौका दें'
- मार्च महीने में घरेलू गैस की 30 प्रतिशत ज्यादा सप्लाई
- अनावश्यक रिफिल बुकिंग न करायें

रांचीः जिले में कोरोना वायरस के संक्रमण से रोकथाम के लिए जारी लॉकडाउन के दौरान लोगों द्वारा घरेलू गैस आपूर्ति को लेकर परेशान होने की जरुरत नहीं है। इंडियन ऑयल के एरिया चीफ मैनेजर रमेश कुमार ने कहा है कि उपभोक्ता घरेलू गैस की उपलब्धता को लेकर कोई शंका न रखें। एलपीजी सिलेंडर की आपूर्ति को लेकर किसी तरह की रोक नहीं है। श्री रमेश ने कहा कि लॉक डाउन के दौरान आप अपने घरों में रहें, हमें सेवा का मौका दें।

इंडियन ऑयल के चीफ मैनेजर के आश्वासनों के बावजूद कुछ लोगों से ये शिकायतें भी मिल रही हैं कि गैस सिलिंडर की होम डिलिवरी नहीं हो पा रही या एजेंसी इसमें असमर्थता जता रहे हैं

इंडियन ऑयल के एरिया चीफ मैनेजर रमेश कुमार ने बताया कि इस महीने एलपीजी की आपूर्ति 30 प्रतिशत ज्यादा की गयी है, जो करीब 37000 घरेलू सिलेंडर होता है। उन्होंने कहा कि अनावश्यक रिफिल बुकिंग न करायें, लॉक डाउन के दौरान होम डिलीवरी की सेवा बिना रुके जारी रहेगी। साथ ही उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि एलपीजी होम डिलीवरी की गाड़ी को न रोकें, इस घर पर सिलेंडर की होम डिलीवरी का इंतजार कर रहे उपभोक्ताओं को परेशानी का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने लोगों से होम डिलीवरी सेवा निर्बाध जारी रखने में लोगों से सहयोग की अपील की।

परमिट वाहनों के अभाव के कारण पशु चारे की कमी, कीमत में वृद्धि

सिदाम महतो

रांची/बुण्डूः लॉकडाउन में पशु चारे(कुटी) के कीमतों में अचानक वृद्धि हुई है।राजधानी रांची के पशु चारा दुकानों में 5 से 8 रुपया प्रति किलो मिलने वाला वाला कुटी का दाम अब 30 से 40 रूपया प्रति किलो हो गया है। कीमत में वृद्धि के वावजूद कुछ दुकानों में तो कुटी मिल भी नही रहा है। कुट्टी के आपूर्ति में कमी आई है।लॉक डाउन में जरूरी सेवा वाले वाहन परमिट लेकर चल सकते हैं । पर कुटी (पशु चारा)ढोने वाले ऐसे भी वाहन मालिक हैं जिनके पास परमिट नही है। उनकी गाड़ी को रोक जा रहा है। बुण्डू थाना में कुटी लदे हुए वाहनों को रोका । इस सम्बन्ध में पूछे जाने पर थाना प्रभारी कहते हैं कि पशु चारा भी जरूरी सेवा के श्रेणी में आता है । इसके लिए एसडीओ से परमिट लेना जरूरी है। परमिट वाले दूसरे व्यापारी कुट्टी को ले जा रहे है। जिस हिसाब से कुटी की मांग है उस हिसाब से पूर्ति नही हो रही है। फलस्वरूप कुटी का दाम एकाएक बढ़ गया। लॉक डाउन में व्यापारी गांव से 5 रुपया प्रति किलो कुटी खरीद के ले जा रहे हैं।

लॉक डाउन से पहले 2 रुपया प्रति किलो खरीद रहे थे।पशु चारा ढोने वाले वाहन के परमिट के लिए प्रशासन को कदम उठाने जरूरी हैं। जिससे ज्यादा से ज्यादा पशु चारा की आपूर्ति हो सके।

लॉकडाउन में जिला प्रशासन ने किये कई इंतजाम

संवाददाता

- आवश्यक वस्तुओं की डिलीवरी के लिए शुरु की गयी होम डिलीवरी सेवा।
- दवाओं और आवश्यक वस्तुओं की डिलीवरी के लिए जिले में जारी है सेवा।
- 26 मार्च 2020 को 1635 लोगों को होम डिलीवरी सेवा का मिला लाभ।

रांची : नोवेल कोरोना वायरस के रोकथाम और बचाव के लिए रांची जिले जारी लॉक डाउन के दौरान लोगों को आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति बाधित न हो, इसके लिए रांची जिला प्रशासन की ओर से पूरा प्रयास किया जा रहा है। उपायुक्त-सह-जिला दंडाधिकारी, रांची, श्री राय महिमापत रे के निदेशानुसार जिले वासियों के बीच दवाएं और आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के लिए होम डिलीवरी सेवा शुरु की गयी है।

दवाएं और आवश्यक वस्तुओं की होम डिलीवरी के लिए शुरु की गयी सेवा का 26 मार्च 2020 को रांची जिले के 1635 लोगों को लाभ मिला है। जारी किये गये विभिन्न मोबाइल नंबरों पर ऑर्डर करने पर 24 घंटे के अंदर आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति की जा रही है। आनेवाले दिनों में लॉकडाउन के दौरान ज्यादा से ज्यादा लोगों को होम डिलीवरी सेवा का लाभ मिले इसके लिए रांची जिला प्रशासन द्वारा लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। आवश्यक वस्तुओं के लिए इन नंबरों पर व्हाट्सएप या मैसेज करने से होगी होम डिलीवरी

- वेजीगो - 7070135033, 8969178400
- सुविधा सुपर मार्ट - 8292268300
- बिग बाजार जेसी टावर - 8928932034
- बिग बाजार, कांके रोड - 8928932038
- बिग बाजार, न्यूक्लियस मॉल - 8928932033

- विशाल मेगा मार्ट - 7004976433,9835943930
- रिलायंस फ्रेश - 7781018073, 9771475159, 9771488159, 9934362251

डायपर एवं नवजात शिशु के आवश्यक सामग्री के लिए 8986654233 या 9431165987 पर कॉल किया जा सकता है। डिलीवरी शुल्क मात्र 50 रुपये है। दिये गये नंबरों पर केवल व्हॉट्सएप या मैसेज करें। इसके साथ दवाओं की होम डिलीवरी की भी व्यवस्था जिला प्रशासन की ओर से की गयी है। डॉक्टर के प्रिसक्पिशन को दिये नंबर पर व्हॉट्सएप या मैसेज करने पर 24 घंटे के भीतर डिलीवरी की जा रही है।

- परिवार मेडिकेयर, सर्जना चौक 9334028976, 9835174536, 7091769925
- जेनरिक फैमिली दवाखाना (जीएफएफ) किशोरगंज -7250261450 रातू रोड - 9852615812 लालपुर- 9934305978

आवश्यक वस्तुओं की पिक अप और डिलीवरी के लिए भी रांची जिला प्रशासन की ओर से सेवा की शुरुआत की गयी है जिसके लिए टीम हेल्प का गठन किया गया है। जो रांची शहर में आवश्यक वस्तुओं के पिकअप और डिलीवरी में अपनी सेवा देगी। साथ ही दूध और ब्रेड डिलीवरी सेवा का भी लोगों को लाभ मिल रहा है, इस-के लिए डिलीवरी शुल्क 20 रुपये हैं।

महत्वपूर्ण फोन नंबर

- ज़िला कंट्रोल रूम-1950
- हेल्पलाइन नंबर-1075,181
- टोल फ्री चिकित्सकीय सलाह-104
- टोल फ्री एंबुलेंस सेवा- 108
- अंतरराष्ट्रीय कॉल सेंटर-11-23978046
- DPM-9431103012
- Dist. Epidemiologist-0651-221561 , 7903782859.

हटिया में तीन सौ लोगों को रेलवे ने भोजन कराया

रांची :कोरोनावायरस के संक्रमण से बचाव के लिए पूरे देश को 21 दिन के लिए लॉक डाउन किया गया है। इस लॉक डाउन में गरीब एवं मजदूर वर्ग परिवारों के लिए भोजन की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है। इस समस्या को कम करने के लिए रेल मंत्रालय ने यह सुनिश्चित किया है कि आईआरसीटीसी के बेस किचन के माध्यम से गरीब एवं जरूरतमंद लोगों को भोजन उपलब्ध कराया जाएगा।

29 मार्च को रांची रेल मंडल में आईआरसीटीसी द्वारा बनाए गए भोजन को रांची रेल मंडल के वाणिज्य विभाग एवं रेल सुरक्षा बल द्वारा रांची रेलवे स्टेशन के नजदीक एवं हटिया रेलवे स्टेशन के रेल सुरक्षा बल पोस्ट से 300 से अधिक जरूरतमंद लोगों को भोजन उपलब्ध कराया गया । रांची रेल मंडल एवं

आईआरसीटीसी भोजन वितरण की इस व्यवस्था को निकट भविष्य में भी जारी रखेगी।भोजन वितरण के समय कोरोनावायरस के संक्रमण से बचाव के तरीकों को कर्मचारियों द्वारा अपनाया गया, सोशल डिस्टेंसिंग,तथा साफ-सफाई का विशेष ख्याल रखा गया।

सीसीएल की जूनियर ओवरमैन पद की परीक्षा स्थगित

रांची :सीसीएलमें जूनियर ओवरमैन, टी एण्-ड एस ग्रेड-सी के पद के लिए 29 मार्च, 2020 को होने वाली परीक्षा कोरोना वायरस की स्थिति को देखते हुये अगले आदेश तक स्थगित कर दिया गया है। अगली तिथि की घोषणा परीक्षा तिथि से 15 दिन पूर्व सीसीएल की वेबसाईट www.centralcoalfields.in < http://www.centralcoal-fields.in> पर जारी कर दी जायेगी। यह जानकारी महाप्रबंधक (भर्ती) सुश्री रश्मि दयाल ने दी है।

देवघर में बना फूड ग्रेन बैंक

- गरीब, मजदूर तबके एवं लॉक डाउन से प्रभावित दूरदराज क्षेत्र के व्यक्तियों की सुविधा हेतु फूड ग्रेन बैंक
- आप सभी का सहयोग आपेक्षितः उपायुक्त

सूचना भवन, देवघरः उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी श्रीमती नैंसी सहाय द्वारा जानकारी दी कि कोराना वायरस से बचाव, रोकथाम एवं इसके संभावित प्रसार को रोकने के उद्देश्य से जिला प्रशासन व पुलिस प्रशासन द्वारा लगातार आवश्यक कार्य किया जा रहा है। ऐसे में गरीब, मजदूर तबके एवं लॉक डाउन से प्रभावित दूरदराज क्षेत्र के व्यक्तियों को आवश्यक सुविधा पहुँचाने हेतु लगातार प्रयासरत है। इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा रहा है कि अनेक समाजसेवी एवं दातागण स्वेच्छा से खाद्य सामग्रियों यथा गेहूं चावल एवं अन्य राशन सामग्री सहयोग स्वरूप दान देना चाहते है। इस प्रकार के दान दिए गए सामग्रियों के संग्रह हेतु देवघर जिला अंतर्गत अनुमंडल स्तर पर दो फूड ग्रेन बैंक की स्थापना की गई हैं। उपायुक्त ने सभी से अपील की है कि इच्छुक दाता खाद्यान्न सामग्री राशन सामग्री का दान पूर्वाहन 7:00 बजे से 1:00 अपराहन की अवधि में देकर अपना सहयोग कर सकते हैं। जिला प्रशासन द्वारा उपरोक्त सामग्री को संग्रहित कर भविष्य में जरूरतमंदों को इससे मदद करेगी।

लॉकडाउन से परेशानी लेकिन ये जरूरी था : प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री ने मन की बात कार्यक्रम के जरिए देशवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे देशवासियों से क्षमा मांगते हैं, क्योंकि कोरोना वायरस से लड़ने के लिए कुछ ऐसे फैसले लेने पड़े हैं जिनसे देशवासियों को तकलीफ उठानी पड़ रही है, पीएम मोदी ने गरीबों से विशेषकर क्षमा मांगी है।

कड़े कदम उठाने के लिए माफी चाहता हूं: पीएम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि कुछ फैसलों की वजह से आपकी जिंदगी में परेशानी आ गई है. गरीबों को खास दिक्कत हुई है. पीएम मोदी ने कहा कि मुझे मालूम है कि आपमें से कुछ हमें नाराज भी होंगे. लेकिन कोरोना से लड़ने के लिए ये कदम जरूरी थे. पीएम मोदी ने कहा कि कोरोना वायरस इंसान को मारने की जिद ले बैठा है. उन्होंने कहा कि लॉक डाउन आपको बचाने के लिए लगाया गया है.प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि कोविड 19 से लड़ाई कठिन है और इससे मुकाबले के लिए ऐसे फैसलों की जरूरत थी. भारत के लोगों को सुरक्षित रखने के लिए ये जरूरी था.

लॉकडाउन न मानने वाले लोग जिंदगी खिलवाड़ कर रहे हैं

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि वे समझते हैं कि कोई भी जान बूझकर कानून नहीं तोड़ना

चाहता है. लेकिन कुछ लोग ऐसा कर रहे हैं. पीएम ने कहा कि वे ऐसे लोगों से कहना चाहते हैं कि अगर वे लॉकडाउन का पालन नहीं करते हैं तो इस बीमारी का पालन करना मुश्किल होगा. उन्होंने कहा कि लॉकडाउन को न मानने वाले लोग अपनी जिंदगी से खिलवाड़ कर रहे हैं .प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि कोरोना के खिलाफ जंग लड़ रहे हमारे जो फ्रंटलाइन सोल्जर हैं उनसे आज हमें प्रेरणा लेने की जरूरत है. पीएम ने कहा कि डॉक्टर, नर्स, मेडिकल स्टाफ से हमें सीखने की जरूरत है. पीएम ने कहा कि कोरोना को हराने वाले साथियों से हमें प्रेरणा लेने की जरूरत है.

कोरोना के ठीक हुए लोगों से पीएम ने की बात प्रधानमंत्री ने मन की बात कार्यक्रम में वैसे लोगों से बात की जो कोरोना वायरस के संक्रमण में आए और इलाज करवाकर ठीक हुए. पीएम ने सॉफ्टवेयर इंजीनियर राम और आगरा के अशोक कपूर से बात की. राम ने कहा कि लॉकडाउन जेल जैसा नहीं है और लोग नियमों का पालन कर ठीक हो सकता है. अशोक कपूर ने कहा कि वे आगरा के स्वास्थ्यकर्मियों और स्टाफ को धन्यवाद देना चाहते हैं, उन्होंने कहा कि दिल्ली के अस्पताल के कर्मचारियों और स्टाफ ने उनकी मदद की .प्रधानमंत्री ने कोरोना के मरीजों का इलाज करने वाले डॉक्टरों से बात की. इन डॉक्टरों ने बताया कि वे पूरे जज्बे के साथ कोरोना के मरीजों का इलाज कर रहे हैं. प्रधानमंत्री ने आचार्य चरक की पंक्तियों की चर्चा करते हुए कहा कि जो बिना किसी भौतिक कामना के मरीजों की सेवा करता है, वही सच्चा और सबसे बढ़िया डॉक्टर है. पीएम ने कहा कि वे सभी नर्सों को सैल्युट करते हैं जो अतुलनीय निष्ठा के साथ मरीजों की सेवा कर रहे हैं.

अपने संबोधन में पीएम मोदी ने इस मुश्किल समय में किराना दुकान चलाने वाले, ई कॉमर्स, बैंकिंग, डिजिटल ट्रांजेक्शन को संभव बनाने वाले लोगों को याद किया और उन्हें सैल्यूट किया.

सोशल डिस्टेंस बढ़ाओ, इमोशनल डिस्टेंस घटाओ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि उन्होंने लोगों से सोशल डिस्टेंस बढ़ाने को कहा है, लेकिन इस दौरान वे इमोशनल डिस्टेंस घटा सकते हैं और अपने सगे-संबंधियों, पुराने दोस्तों, परिचितों से बात कर सकते हैं. अपने शौक पूरा कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि जब उन्हें ये जानकारी मिली कि क्वारनटीन हुए लोगों के साथ कुछ लोग बदसलूकी कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि हमें ऐसे लोगों को लेकर संवेदनशील होना पड़ेगा।

गीताधाम की ओर से एक मानवीय पहल

एजेंसियां

वृन्दावन : एक तरफ पूरा देश कोरोना संक्रमण जैसे महामारी से जूझ रहा है, वहीं दूसरी तरफ समाज के अत्यंत गरीब-मजदूर परिवार भूखे पेट सोने को मजबूर हैं!

गरीब मजदूरों के घरों में राशन नहीं होने के कारण भूखे पेट सो रहे जरूरतमंदों परिवार के घरों में आवश्यक राशन भगवद्गीता धाम द्वारा भिजवाने का प्रयास किया जा रहा है। इसकी शुरुआत भगवान के परम लीला-भूमि ब्रज मंडल से की गई है। ब्रज मंडल के जिस-जिस गांव से अत्यंत गरीब-मजदूरों द्वारा मदद की मांग आती है, वहां के किसी स्थानीय राशन दुकान के मालिक से बात क-रके उसके अकाउंट में पैसा ट्रांसफर किया जा सकता है। उस राशन को हमारे किसी प्रतिनिधि द्वारा स्थानीय वितरण के लिए उपलब्ध कराया जाएगा। क्योंकि अभी जो सहायता करना चाह रहे हैं वे किसी को अन्न भिजवा नहीं सकते और जरूरतमंद यहां आ नहीं सकते। हमलोगों ने इस दिशा में आज से आपके-साथ गीताधाम की ओर से एक पहल शुरू कर दी है। गरीबों के प्रति करुणा, दया एवं प्रेम रखने वाले सभी

सामाजिक शुभचिंतकों से यह आग्रह है कि अपने-अपने क्षेत्रों में इस तरह की मदद जहां तक दे सकते हैं जरूर करने की कृपा करें। हमारा आज सबसे बड़ा धर्म यही है कि किसी के यहां का चूल्हा बंद नहीं हो। महीनों तक कठिन समय चलेगा क्योंकि चीन का अनुभव दिखाता है कि यह तीन हफ्तों की बात नहीं है शायद 3 महीनों से ज्यादा लगे। तब-तक हमारे गरीब लोगों को जिंदा रखना भी जरूरी है। शायद एक डेढ़ हफ्ते में प्रशासन नीतिगत निर्णयों को लागू करने में शुरुआत कर पाए। तब तक हमसब को अपने अपने इलाकों में आस पास के गांवों में फोन से पता कर जो हमसे बन पड़े वह मदद जरूर करनी चाहिए। अगर आपको गांव में किसी भी प्रकार का कोई संपर्क नहीं है और आप स्वयं ऐसे अत्यंत गरीब मजदूरों को सहायता प्रदान करने में सक्षम नहीं है तो, हम आपकी ओर से सेवा प्रदान करने के लिए सज्ज हैं।

गरीबों की जीवन रक्षा करने के इस परम पुनीत अभियान में आप चाहें तो अपना सहयोग नीचे दिए गए एकाउंट डिटेल में प्रदान कर सकते हैं। हम किसी भी क्षेत्र में, जहां हमारे संपर्क हैं, अन्न वितरण में मदद कर सकते हैं। लाभुकों के चित्र और वीडियो यथा संभव हम सभी से, और दान दाताओं से विशेष रूप से, साझा करते रहेंगे।

फोटो न्यूज

कोरोना वायरस को लेकर देश भर में हुए लॉक डाउन में झारखंड पुलिस गरीबों असहायों के लिए मसीहा बनकर सामनें आ रही है। मांगकर गुज़रा करनें वाले बेघर गरीबों को रांची के लोअर बाजार थाना द्वारा भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। लोअर बाजार थाना प्रभारी सतीश कुमार खुद घूम -घूम कर गरीबों को खाना खिला रहे हैं। सतीश कुमार नें कहा कि इस देशव्यापी लॉक डाउन के कारण गरीबों को खासा परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है खासकर वे गरीब जिनका अपना कोई आशियाना नहीं है वे काफी मुश्किल में है हमारी कोशिश होगी कि जब तक लॉक डाउन है हम किसी गरीब को भूखे सोने ना दें।

खुद का बचाव ही दूसरों का बचाव है

- सोशल डिस्टेंसिंग का करें अनुपालन
- कोरोना वायरस संक्रमण का खतरा घटायें
- हाथों को साबुन से धोना रखें याद
- खांसी बुखार या सांस लेने में तकलीफ हो तो डॉक्टर से तुरंत संपर्क करें
- ध्यान रखें, लापरवाही न करें।

कोरोनावायरस चमगादड़ या पैंगोलिन से इंसानों में आया

एजेंसियां :अभी भी दुनिया भर में इस बात की जद्दोजहद चल रही है कि कोरोनावायरस आखिर किस जानवर से फैला। वैज्ञानिक कोरोनावायरस के बारे में अधिक जानने के लिए लगातार कोशिश कर रहे हैं। वायरस के जीनोम को लेकर हालिया दो अध्ययन विवादास्पद निष्कर्ष पर पहुच गए थे। इन अध्ययनों ने सांप को नए वायरस के लिए जिम्मेदार बताया था।

अब एक नए अध्ययन में इस बात का खंडन किया गया है तथा बताया गया है कि चिंटी खानेवाला जानवर पैंगोलिन ने चमगादड़ और मनुष्यों में इस वायरस को फैलाया है। यह शोध एसीएस' जर्नल ऑफ़ प्रोटीन रिसर्च में प्रकाशित हुआ है। हांलाकि इस शोध को समीक्षा के लिए विशेषज्ञों के पास भेजा गया है। ज्यादातर विशेषज्ञ इस बात से सहमत हैं कि सार्स-सीओवी-2 फैलाने का चमगादड़ एक प्राकृतिक स्रोत है, लेकिन चमगादड़ से इंसानों में फैलने के लिए बीच में एक होस्ट की आवश्यकता होती है। यांग झांग और

इससे पहले आए अध्ययन में कहा गया था कि सांप के जरिए कोरोनावायरस इंसानों में पहुंचा, लेकिन नए अध्ययन ने इसे खारिज कर दिया है

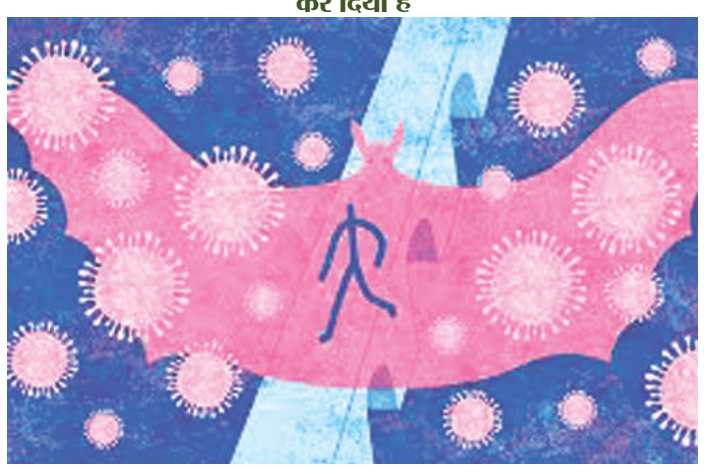

उनके सहकर्मी ने एसएआरएस-सीओवी-2 डीएनए और प्रोटीन अनुक्रम (सीक्वन्स) का अधिक सावधानी पूर्ण विश्लेषण किया। इसके लिए बड़े डेटा सेट और नए अधिक सटीक जैव सूचना विज्ञान के तरीकों और डेटाबेस का उपयोग किया। उन्होंने पाया कि प्रोटीन के चार खण्डों को सार्स-सीओवी-2 और एचआईवी-1 के बीच अलग तरीके से बांटा गया था, इस तरह चार क्रमवार खण्डो में अन्य वायरस भी पाए जा सकते है, जिसमें चमगादड़ कोरोनावायरस भी शामिल है। सांपों के वायरस फैलाने वाले सुझाव वाले विश्लेषण में एक गलती को उजागर करने के बाद, टीम ने पैंगोलिन के ऊतकों से अलग डीएनए और प्रोटीन अनुक्रमों (सीक्वन्स) की खोज की जो कि सार्स-सीओवी -2 के समान थे। शोधकर्ताओं ने बीमार जानवरों के फेफड़ों में प्रोटीन अनुक्रम की पहचान की जो मानव वायरस के प्रोटीन के 91 फीसदी समान थे।

इसके अलावा, पैंगोलिन कोरोनावायरस के प्रोटीन रिसेप्टर बाइंडिंग डोमेन में सार्स-सीओवी-2 से केवल 5 एमिनो एसिडों का अंतर था, जबकि मानव और चमगादड़ संक्रमित प्रोटीन के बीच 19 अंतर पाए गए। यह सबूत पैंगोलिन को नए कोरेनोवायरस के लिए सबसे संभावित होस्ट के रूप में मानता है, शोधकर्ताओं का कहना है कि इसके अतिरिक्त अन्य होस्ट भी हो सकते हैं। ●

गांजें में होते है कई औषधीय गुण

दुनिया भर में गांजे को एक नशीले पदार्थ के रूप में जाना जाता है। जिस-का प्रयोग ड्रग्स के रूप में किया जाता है। हालांकि दुनिया के 18 से ज्यादा देश चिकित्सीय प्रयोग के लिए इसको कानूनी वैद्यता प्रदान कर चुके हैं। हाल ही में मैकमास्टर यूनिवर्सिटी द्वारा किये एक नए अध्ययन में इसके औषधीय गुणों का पता चला है। अमेरिकन केमिकल सोसाइटी के इन्फेक्शस डिजीज नामक जर्नल में छपे इस शोध में गांजे में एंटीबायोटिक गुण होने की बात को माना गया है। शोधकर्ताओं के अनुसार गांजे में अद्भुत रूप से एंटीबायोटिक गुण होते हैं।

जिससे एंटीबायोटिक रेसिस्टेन्स से निपटने के लिए प्रभावी दवा बनायी जा सकती है। इसमें मौजूद रासायनिक यौगिक 'कैनाबिनॉइड' सीबीजी भी कहा जाता है, न केवल जीवाणुरोधी होता है, बल्कि यह मेथिसिलिन प्रतिरोधी बैक्टीरिया 'स्टैफिलोकोकस ऑरियस के खिलाफ भी एक कारगर इलाज है। गौरतलब है कि एमआरएसए नामक यह बैक्टीरिया एंटीबायोटिक रेसिस्टेन्स होता है।

नोएडा में सबसे ज्यादा कोरोना संक्रमण

उत्तर-प्रदेश का आईटी हब नोएडा अब कोरोना संक्रमण का हब बनता जा रहा है। यहां की आधुनिक चिकित्सा सुविधा भी कोरोना संक्रमण के मामलों को कम करने में सफल नहीं हो पा रही है। स्थिति यह है कि लॉकडॉउन के बाद भी यहां लगातार कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या बढ़ रही है। गौतमबुद्ध नगर में शामिल नोएडा में 28 मार्च को 5 नए मरीजों की पहचान हुई। यहां अब 22 लोग कोराना पॉजीटिव हो चुके हैं।

नोएडा उत्तर-प्रदेश का शो-विंडो है। नोएडा की स्थापना 17 अप्रैल 1976 को हुई थी। वैसे तो औद्योगिक दृष्टिकोण से इस शहर को बनाया गया, लेकिन धीरे-धीरे इसकी पहचान आईटी हब के रूप में बन गई। दिल्ली-एनसीआर में जहां गुड़गांव की पहचान बीपीओ के लिए होती है, उसी प्रकार नोएडा की पहचान आईटी के लिए होती है। आईटी के अलावा गारमेंट् उद्योग भी यहां बहुत हैं। यही वजह है कि यहां से विदेशों में कारोबार होता है। और विदेशी लोगों का यहां आना जाना तो लगा ही रहता है, बल्कि यहां के लोग भी विदेश जाते रहते हैं। चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, अमेरिका सहित दुनिया के 13 ऐसे देश हैं, जिनसे नोएडा के कारोबारी रिश्ते हैं। कोरोना को लेकर जब से भारत में स्क्रीनिंग शुरू हुई है, तक से लेकर अब तक नोएडा में विदेश से 1105 लोग आए हैं, जिनमें से प्रशासन ने 1052 लोगों की पुष्टि कर ली है। इनमें से 297 लोगों के सैंपल जांच के लिए भेजे जा चुके हैं, जिनमें से 221 की रिपोर्ट निगेटिव आई है। अन्य लोगों की रिपोर्ट अभी आनी बाकी है।

10 हजार लोगों पर है निगरानी

28 मार्च तक नोएडा में जिन 17 लोगों को कोरोना संक्रमित पाया गया है, उन्हें ग्रेटर नोएडा स्थित राजकीय आयुर्विज्ञान संस्थान-जिम्स में बनाए गए आईसोलेशन वॉर्ड में भर्ती कराया गया है। इसके अलावा 120 लोगों को जिले के क्वारंटीन सेंटरों में रखा गया है, जिनमें सबसे अधिक 81 लोगों को नोएडा के सेक्टर-39 स्थित नए जिला अस्पताल में बनाए गए क्वारंटीन सेंटर में भर्ती कराया गया है। 36 लोगों को ग्रेटर नोएडा के अंबेडकर छात्रावास में बनाए गए क्वारंटीन सेंटर व 3 लोगों को नोएडा चाइल्ड पीजीआई के क्वारंटीन वॉर्ड में भर्ती कराया गया है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. अनुराग भार्गव ने बताया कि जिला स्वास्थ्य विभाग की टीम 10 हजार लोगों पर निगरानी रख रही है। ये सभी उन सोसायटीज के लोग हैं, जिनमें कोरोना पॉजिटिव व संदिग्ध मरीज मिले हैं।

नोएडा में पांच, ग्रेटर नोएडा में दो सोसाइटी सील

नोएडा-ग्रेटर नोएडा की जिन सोसायटीज में कोरोना संक्रमित मरीज मिले हैं, उन सोसायटीज को 31 मार्च तक के लिए सीज किया गया है। इनमें सेक्टर-100 स्थित लोट्स स्पेशिया, सेक्टर-78 की हाइड पार्क, सेक्टर-74 की सुपरटैक कैपटाउन, नोएडा एक्सटेंशन स्थित निराल ग्रीन शायर व सेक्टर-135 स्थित लॉजिक्स ब्लासम सोसाइटी शामिल हैं। इसके अलावा ग्रेटर नोएडा के अल्फा-वन में संक्रमित मरीज मिलने से सभी ब्लॉकों को सीज कर दिया है। ग्रेटर नोएडा की ही जीटा-वन की एटीएस डोल्से हाउसिंग सोसाइटी में रहने वाला युवक भी कोरोना की संक्रमण की चपेट में है। इस सोसायटी को भी सीज कर दिया गया है। जिलाधिकारी बीएन सिंह ने बताया कि जब तक सीज सोसायटीज में रहने वाले सभी लोगों की मेडिकल जांच पूरी नहीं की जाएगी और इन इलाकों को पूरी तरह सैनेटाइज नहीं किया जाएगा, तक तब हर किसी के बाहर व अंदर आने जाने पर रोक लगा दी गई है। लोगों तक जरूरी सामान पहुंचाने में पुलिस-प्रशासन की टीम मदद कर रही है। सोसायटीज के लोग भी खुद एहतियात बरत रहे हैं। सेक्टर-74 हाइड पार्क सोयायटी एसोसिएशन के अध्यक्ष अश्विनी त्रिपाठी ने बताया कि कोरोना के दहशत को देखते हुए लोगों के बाहर से आने पर भी रोक लगाई गई है और अंदर से भी बाहर नहीं जाने दिया जा रहा है।

हम तो आदिकाल से *क्वारेंटाईन* करते हैं

मुरलीधर

सनातनी हिन्दुओ का छुआछूत (अश्पृश्यता) कब "सोशल डिस्टेंसिंग" बन गया किसी को पता ही न चला।

आज जब सिर पर घूमता एक वायरस हमारी मौत बनकर बैठ गया तब हम समझें कि हमें क्वारेंटाईन होना चाहिये, मतलब हमें ''सूतक'' से बचना चाहिये। यह वही 'सूतक' है जिसका भारतीय संस्कृति में आदिकाल से पालन किया जा रहा है। जबकि विदेशी संस्कृति के नादान लोग हमारे इसी 'सूतक' को समझ नहीं पा रहे थे। वो जानवरों की तरह आपस में चिपकने को उतावले थे ? वो समझ ही नहीं रहे थे कि मृतक के शव में भी दूषित जीवाणु होते हैं ? हाथ मिलाने से भी जीवाणुओं का आदान-प्रदान होता है ? और जब हम समझाते थे तो वो हमें जाहिल बताने पर उतारु हो जाते । हम शवों को जलाकर नहाते रहे और वो नहाने से बचते रहे और हमें कहते रहे कि हम गलत हैं और आज आपको कोरोना का भय यह सब समझा रहा है।

- हमारे यहॉ बच्चे का जन्म होता है तो जन्म ''सूतक'' लागू करके मां-बेटे को अलग कमरे में रखते हैं, महिने भर तक, मतलब क्वारेंटाईन करते हैं।
- हमारे यहॉ कोई मृत्यु होने पर परिवार सूतक में रहता है लगभग 12 दिन तक सबसे अलग, मंदिर में पूजा-पाठ भी नहीं। सूतक के घरों का पानी भी नहीं पिया जाता।
- हमारे यहां शव का दाह संस्कार करते है, जो लोग अंतिमयात्रा में जाते हैं उन्हे सबको सूतक लगती है, वह अपने घर जाने के पहले नहाते हैं, फिर घर में प्रवेश मिलता है।
- हम मल विसर्जन करते हैं तो कम से कम 3 बार साबुन से हाथ धोते हैं, तब शुद्ध होते हैं तब तक क्वारेंटाईन रहते हैं। बल्कि मलविसर्जन के बाद नहाते हैं तब शुद्ध मानते हैं।
- हम जिस व्यक्ति की मृत्यु होती है उसके उपयोग किये सारे रजाई-गद्दे चादर तक ''सूतक'' मानकर बाहर फेंक देते हैं।
- हमने सदैव होम हवन किया, समझाया कि इससे वातावरण शुद्ध होता है, आज विश्व समझ रहा है, हमने वातावरण शुद्ध करने के लिये घी और अन्य हवन सामग्री का उपयोग किया।
- हमने आरती को कपूर से जोड़ा, हर दिन कपूर जलाने का महत्व समझाया ताकि घर के जीवाणु मर सकें।
- हमने वातावरण को शुद्ध करने के लिये मंदिरों में शंखनाद किये,
- हमने मंदिरों में बड़ी-बड़ी घंटियॉ लगाई जिनकी ध्वनि आवर्तन से अनंत सूक्ष्म जीव स्वयं नष्ट हो जाते हैं।
- हमने भोजन की शुद्धता को महत्व दिया और उन्होने मांस भक्षण किया।
- हमने भोजन करने के पहले अच्छी तरह हाथ धोये, और उन्होने चम्मच का सहारा लिया।
- हमने घर में पैर धोकर अंदर जाने को महत्व दिया
- हम थे जो सुबह से पानी से नहाते हैं, कभी-कभी हल्दी या नीम डालते थे और वो कई दिन नहाते ही नहीं
- हमने मेले लगा दिये कुंभ और सिंहस्थ के सिर्फ शुद्ध जल से स्नान करने के लिये।
- हमने अमावस्या पर नदियों में स्नान किया, शुद्धता के लिये ताकि कोई भी सूतक हो तो दूर हो जाये।
- हमने बीमार व्यक्तियों को नीम से नहलाया ।
- हमने भोजन में हल्दी को अनिवार्य कर दिया, और वो अब हल्दी पर सर्च कर रहे हैं।
- हम चन्द्र और सूर्यग्रहण की सूतक मान रहे हैं, ग्रहण में भोजन नहीं कर रहे और वो इसे अब मेडिकली प्रमाणित कर रहे हैं।
- हम थे जो किसी को भी छूने से बचते थे, हाथ नहीं लगाते थे और वो चिपकते रहे।
- हम थे जिन्होने दूर से हाथ जोडक़र अभिवादन को महत्व दिया और वो हाथ मिलाते रहे।
- हम तो उत्सव भी मनाते हैं तो मंदिरों में जाकर, सुन्दरकाण्ड का पाठ करके, धूप-दीप हवन करके वातावरण को शुद्ध करके और वो रातभर शराब पी-पीकर।
- हमने होली जलाई कपूर, पान का पत्ता, लोंग, गोबर के उपले और भविष्य सामग्री सब कुछ सिर्फ वातावरण को शुद्ध करने के लिये।
- हम नववर्ष व नवरात्री मनायेंगे, 9 दिन घरों-घर आहूतियॉ छोड़ी जायेंगी, वातावरण की शुद्धी के लिये।
- हम देवी पूजन के नाम पर घर में साफ-सफाई करेंगे और घर को जीवाणुओं से क्वरेंटाईन करेंगे।
- हमनें गोबर को महत्व दिया, हर जगह लीपा और हजारों जीवाणुओं को नष्ट करते रहे, वो इससे घृणा करते रहे
- हम हैं जो दीपावली पर घर के कोने-कोने को साफ करते हैं, चूना पोतकर जीवाणुओं को नष्ट करते हैं, पूरे सलीके से विषाणु मुक्त घर बनाते हैं और आपके यहॉ कई सालों तक पुताई भी नहीं होती।
- अरे हम तो हर दिन कपड़े भी धोकर पहनते हैं और अन्य देशो में तो एक ही कपड़े सप्ताह भर तक पहन लिये जाते हैं।
- हम अतिसूक्ष्म विज्ञान को समझते हैं आत्मसात करते हैं और वो सिर्फ कोरोना के भय में समझने को तैयार हुए।
- हम उन जीवाणुओं को भी महत्व देते हैं जो हमारे शरीर पर सूक्ष्म प्रभाव डालते हैं। आज हमें गर्व होना चाहिऐ हम ऐसी देव संस्कृति में जन्में हैं जहॉ''सूतक''याने क्वारेंटाईन का महत्व है। यह हमारी जीवन शैली है,हम जाहिल, दकियानूसी, गंवार नहीं
- हम सुसंस्कृत, समझदार, अतिविकसित महान संस्कृति को मानने वाले हैं। आज हमें गर्व होना चाहिऐ कि पूरा विश्व हमारी संस्कृति को सम्मान से देख रहा है, वो अभिवादन के लिये हाथ जोड़ रहा है, वो शव जला रहा है, वो हमारा अनुसरण कर रहा है। हमें भी भारतीय संस्कृति के महत्व को, उनकी बारीकियों को और अच्छे से समझने की आवश्यकता है क्योंकि यही जीवन शैली सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ और सबसे उन्नत हैं,गर्व से कहिये हम सबसे उन्नत हैं।

E ZONE CARE

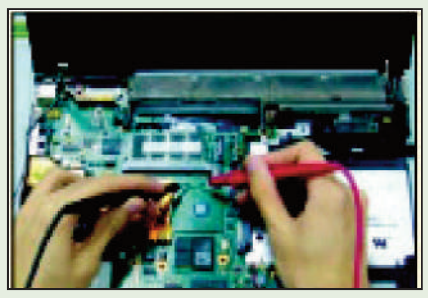

Software Problem, Motherboard Chip-Level Repair, Laptop AC Adapter Repair and Replacement, Laptop LCD Screens Repair and Replacement, Dead Laptop Problems, No Display Problem, LCD Dim Display Problem, LCD White Display Problem, BIOS Password Problem, all type of Laptop repair and service

● **Repair your laptop with 3-month warranty.**

info@ezonecare.in, ezonecare.in
Rospa Tower 3RD Floor, Main Road, Ranchi 93108 96575, 70047 69511
Mon - Fri 10:30 am - 7:00 pm
SUNDAY CLOSED

कोरोना वायरस को शरीर में फैलने से रोक सकता है 'पेप्टाइड'

एजेंसियां : मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) के शोधकर्ता प्रोटीन के एक टुकड़े 'पेप्टाइड' पर परीक्षण कर रहे हैं, जो कोरोनावायरस कोविड-19 को फेफड़ों की कोशिकाओं में प्रवेश करने से रोक सकता है।यह दवा कोविड-19 से निपटने में मददगार हो सकती है। वैज्ञानिकों के अनुसार यह दवा एक छोटा प्रोटीन का टुकड़ा, जिसे पेप्टाइड कहत ` है, जोकि मानव कोशिकाओं की सतह पर पाए जाने वाले प्रोटीन की तरह दिखता है। उनके अनुसार यह पेप्टाइड उस वायरल प्रोटीन को रोक सकता है जिसका उपयोग कोरोनावायरस मानव कोशिकाओं में प्रवेश करने के लिए करता है। इसकी मदद से कोरोनावायरस को शरीर में फैलने से पहले ही रोक सकते हैं एमआईटी में केमिस्ट्री के एसोसिएट प्रोफेसर ब्रैड पेंटेल्यूट, जो इस शोध का नेतृत्व भी कर रहे हैं, ने बताया कि यह एक ऐसा योगिक है जिसे हम ढूंढ रहे थे, क्योंकि यह कोरोनावायरस से सम्बंधित प्रोटीन से उसी तरह प्रतिक्रिया कर रहा है जैसा हमने इसके बारे में सोचा था। यही वजह है कि इसकी मदद से कोरोनावायरस को सेल में प्रवेश करने से रोका जा सकता है। शोधकर्ताओं ने पेप्टाइड के नमूने मानव कोशिकाओं पर परीक्षण करने के लिए भेज दिए हैं। एमआईटी द्वारा किये जा रहे इस शोध से जुड़े प्रारंभिक निष्कर्ष 20 मार्च को एक ऑनलाइन प्रिप्रेरेशन सर्वर, बायोरेक्सिव पर डाले गए हैं। हलांकि उसकी अभी तक वैज्ञानिकों या चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा समीक्षा नहीं की गयी है।

कैसे करता है कोविड-19 मानव शरीर पर हमला?

मार्च की शुरुआत से ही पेंटेल्यूट लैब ने इस परियोजना पर काम करना शुरू कर दिया था। जब से पता चला है कि यह वायरस बीमार व्यक्ति के सेल्स को अपने ट्रिमेरिक स्पाइक ग्लाइकोप्रोटीन के माध्यम से जोड़ लेता है। साथ ही उस शोध में यह भी पता चला था कि कोविड-19, सार्स वायरस की तुलना में 10 गुना अधिक मजबूती से होस्ट सेल्स में चिपक जाता है। उसमें यह भी पता चला था कि यह वायरस होस्ट के किसी विशिष्ट हिस्से में 'रिसेप्टर' से जुड़ जाता है। यह रिसेप्टर, मानव कोशिकाओं की सतह पर पाया जाता है, जिनमें फेफड़े भी शामिल हैं।

वैज्ञानिकों ने एक ऐसे पेप्टाइड को विकसित किया है, जो कोरोनावायरस को शरीर में फैलने से रोक सकता है

कैसे करता है यह पेप्टाइड, कोविड-19 से मुकाबला?

यह जानने के बाद पेंटेल्यूट की लैब में सिमुलेशन की मदद से उस स्थान का पता लगाया गया जहां कोरोनावायरस ग्लाइकोप्रोटीन की मदद से अपने आप को होस्ट सेल के रिसेप्टर से जोड़ लेता है। साथ ही यह भी पता चला की यह दोनों आपस में किस तरह प्रतिक्रिया करते हैं। यह जानने के बाद इससे निपटने के लिए लैब ने पेप्टाइड सिंथेसिस टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया, जो उन्होंने पहले ही विकसित कर रखी थी इसकी मदद से उन्होंने उस पेप्टाइड का निर्माण किया जो इस वायरस के ग्लाइकोप्रोटीन को बांध सकता है साथ ही यह कितनी मजबूती से उसे रोक सकता है, इस बात की भी जांच की गयी है इसे समझने के लिए उन्होंने 100 से भी ज्यादा प्रकार के पेप्टाइड का निर्माण किया है इसके बारे में प्रोफेसर पेंटेल्यूट ने बताया कि हमें पूरा भरोसा है कि हम वास्तव में जानते हैं कि यह अणु शरीर में कहां प्रतिक्रिया करते हैं हम इस जानकारी की मदद से इस वायरस को शरीर में प्रवेश करने से रोक सकते हैं गौरतलब है कि शोधकर्ताओं ने उस पेप्टाइड को लैब में भेज दिया है जहां इसे ह्यूमन सेल्स और कोविड-19 से संक्रमित जानवरों पर टेस्ट किया जा सकता है उनका मानना है कि पेप्टाइड्स के अणु बड़े होते हैं, इसलिए वे कोरोनावायरस पर पकड़ बना सकते हैं और उसे कोशिकाओं में प्रवेश करने से रोक सकते हैं जबकि यदि आप एक छोटे अणु का उपयोग करते हैं, तो यह वायरस के पूरे क्षेत्र को अवरुद्ध नहीं कर पाते हैं हालांकि एंटीबॉडी की सतह भी बड़ी होती है, इसलिए वे भी इसे रोकने में उपयोगी साबित हो सकते हैं। पर उसमें सबसे बड़ी दिक्कत यह है की वो खोज और निर्माण में अधिक समय लेते हैं। जबकि ऐसी दवाओं का फायदा यह है कि उन्हें बड़ी मात्रा में निर्मित करना अपेक्षाकृत कहीं ज्यादा आसान हैं।

पेप्टाइड दवाओं का सबसे बड़ा दोष यह है कि उन्हें आमतौर सीधे तौर पर नहीं खाया जा सकता, उन्हें शरीर में इंजेक्ट करना पड़ता है साथ ही उसमें बदलाव करने की भी जरुरत है जिससे वो ज्यादा समय तक ब्लड में रह सके और अधिक प्रभावी हो सके वर्तमान में लैब इस पर भी काम कर रही है। प्रोफेसर पेंटेल्यूट के अनुसार "यह अनुमान लगाना मुश्किल है कि हम कब तक रोगियों पर इस दवा का परीक्षण कर सकेंगे लेकिन मेरा उद्देश्य है कि अगले कुछ हफ्तों में हम ऐसा कर सकें" दुनिया भर में यह वायरस 6 लाख से भी ज्यादा लोगो को अपनी चपेट में ले चुका है, साथ ही इससे अब तक 27,456 लोगों की जान जा चुकी है ऐसे में यदि जल्दी ही इससे निपटने के लिए कोई दवा नहीं आती, तो इससे मरने वालों का आंकड़ें इससे कई गुना ज्यादा हो सकता है। ●

प्रधानमंत्री के भावनाओं के साथ खड़े हैं झारखंडवासी : दीपक प्रकाश

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष दीपक प्रकाश ने कहा किआज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने मन की बातमें जिन विचारों को रखा प्रदेश की जनता उनके साथ खड़ी है। लोग सुदूर गांव में भी लॉक्ड डाउन का पालन करते हुए प्रशाशन को सहयोग कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि देश को मोदी जी के कुशल नेतृत्व एवम दूरदृष्टि पर पूरा भरोसा है। लॉक्ड डाउन समय मे घरों में रहना कोरोना वायरस से बचाव का एक मात्र उपाय है। श्री प्रकाश ने कहा कि प्रधानमंत्री को गरीबों मजदूरों की पूरी चिंता है परंतु आज की प्राथमिकता कोरोना से देश के करोड़ों नागरिकों की रक्षा है। देश महामारी से उबरकर फिर एकबार मजबूत आर्थिक सम्पन्न विकसित एवम शक्तिशाली राष्ट्र बनेगा।

अखबार के स्वामी सन कम्युनिकेशन के लिये प्रकाशक मनोरंजन सिंह द्वारा प्रकाशित तथा मेसर्स डी. बी. कॉर्प लिमिटेड,प्लॉट नं535 एवं 1272 ललगुटवा पुलिस स्टेशन, रातू, रांची (झारखंड) से मुद्रित और सन कम्युनिकेशन,अपोजिट कब्रिस्तान गेट नं.-2, टीवीएस गली, रातू रोड, रांची-834001 (झारखंड) से प्रकाशित। संपादकः एम.के.शर्मा * (पी.आर.बी. अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये उत्तरदायी)आर.एन.आइ. पंजीयन क्रमांक : **JHAHIN/2019/78094**, email:greenrevolt2019@gmail.com.☎ 0651-2283018, 8539978825, 8825374626. समस्त विवाद रांची न्यायालय के अधीन होंगे।